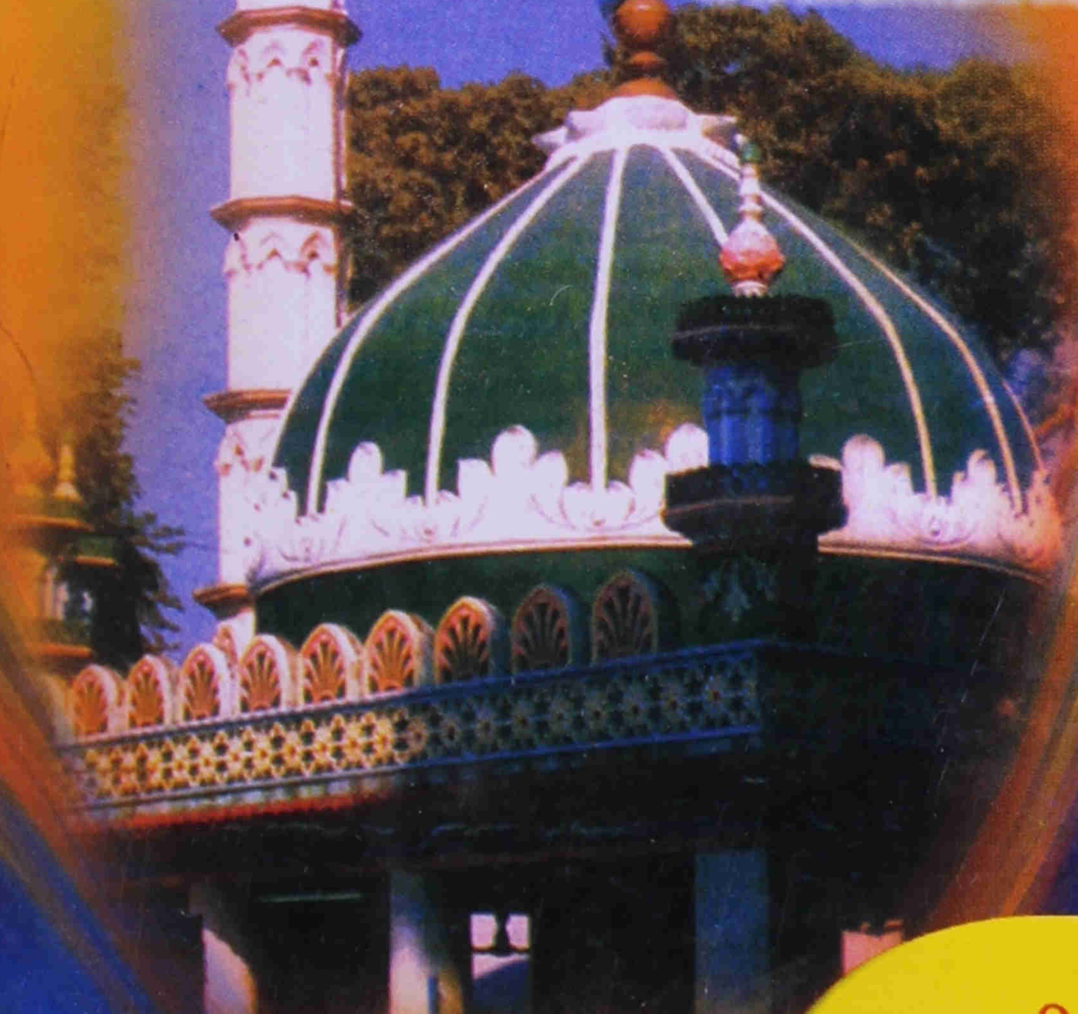
फ़वायदुल मुरीदीन

रचयिता

हज़रत मख़दूमे जहाँ शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी

हिन्दी अनुवाद

सय्यद शाह आ़बिद अ़ली शरफ़ी फ़िरदौसी



मकताबा फ़िरदौसिया,

ख़ानक़ाहे शरफ़

ज़ाकिर नगर, जमशेदपुर

फ़वायदुल मुरीदीन

रचयिता

हज़रत मख़दूमे जहाँ शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यहया मनेरी

हिन्दी अनुवाद

सय्यद शाह आ़बिद अ़ली शरफ़ी फ़िरदौसी

मकताबा फिरदौसिया, ख़ानक़ाहे शरफ़
ज़ाकिर नगर, जमशेदपुर

नाम पुस्तक : फ़वायदुल मुरीदीन

रचयिता : हज़रत मख़दूमे जहाँ शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी रहमतुल्लाह अ़लैहि

हिन्दी अनुवाद : सय्यद शाह मोहम्मद आ़बिद अ़ली शरफ़ी फ़िरदौसी

पुरूफ़ रिडिंग : सय्यद शाह अहमद ग़ज़ाली

प्रकाशक : मक्तबए फ़िरदोसिया
ख़ानक़ाहेशरफ़
ज़ाकिर नगर, जमशेदपुर
(झारखण्ड)

प्रथम संस्करण : 2006

मूल्य : Rs/.

संगणक : **Aerograph Computer**
Arya Kumar Road, Machhua Toli
Near Dinker Chowk, Patna-4
☎ : 2686422

अलकलमुल मसरुर

स्वर्ग के बागीचे के उद्यानपाल, विशेषज्ञों के गुरु हजरत मख्दूमे जहां शेख शर्फुद्दीन अहमद यहया मनीरी फिरदौसी (रह) जो अपने समय के महानतम व्यक्तित्व थे, वे लिखते हैं :---

''गुरुजन के कथन (कलमाते मशायेख़) धरती पर ईश्वरीय सैन्य हैं''

यही कारण है कि मन को उद्दण्ड एवं विषयवासना जैसे शत्रुओं से सुरक्षित रहने के लिए अल्लाहताला ने अपने प्रमुख भक्तों को इस धरती पर प्रकट किया जिसको पूरी दुनिया सूफी संतों के नाम से जानती है। उन् हीं के पवित्र कथन तथा उनकी रचनाओं से अल्लाहताला ने वह काम लिया जिसे दुनिया कदापि विस्मृत नहीं कर सकती। अर्थात् विषय वासना की शुद्धिकरण तथा ह्दय को पवित्र बनाने का सूफी संतों की ही देन है।

विशेषज्ञों के राजा हजरत मख्दूमें जहां शेख शर्फुद्दीन अहमद यहया मनीरी फिरदौसी (रह) का महान व्यक्तित्व वर्तमान में किसी परिचय का मुहताज नहीं। आज भी पूरी दुनिया हजरत मख्दूमें जहां के कारनामों को याद करने पर विवश है। हजरत मख्दूमे जहां का सब से बड़ा कारनामा ''मलफूजात व मकतूबात'' हैं जिस से सारा संसार आज भी लाभान्वित हो रहा है। ''फवायदुल मुरीदेन'' जो हजरत मख्दूमें जहां की रचना है, जिस का उर्दू अनुवाद मुर्शिदे कामिल हजरत मख्दूम शाह मोहम्मद क़सीमुद्दीन अहमद शरफी अलफिरदौसी (रह) साबिक सज्जादानशीं (पूर्व मठाधीश) हजरत मख्दूम हुसैन ने किया है जो मकतबा शर्फ खानकाहे मुअज्जम हजरत मख्दूमें जहां बिहार शरीफ से प्रकाशित हो चुकी है। अब ''फवायदुल मुरीदीन'' का हिन्दी अनुवाद शाह क़सीम उद्दीन अहमद

के छोटे पुत्र हजरत सैयद शाह आबिद अली शरफी अल फिरदौसी (गुलजारे इब्राहीम) की कलम से प्रकाशित हुई है। हजरत शाह आबिद साहब के माध्यम से यह एक महान काम हुआ है। शाह साहब के इस प्रयास को भुलाया नहीं जा सकता। यह पुस्तक सरल व सुगम हिन्दी अनुवाद पर आधारित है। हजरत का आभारी हूं कि उन्होंने यह हिन्दी अनुवाद हजरत मख्दूमें जहां शेख शर्फुद्दीन अहमद यहया मनीरी फिरदौसी के सिलसिले की ख़ानक़ाह, ख़ानक़ाहे शर्फ जमशेदपुर को प्रदान किया और मकताबा फिरदौसिया ख़ानक़ाहे र्शफ जाकिरनगर जमशेदपुर को प्रकाशन का गर्व प्राप्त हो रहा है।

यह हिन्दी भाषा में एक ऐसा पावन उपहार है जिसे पूरे हिन्दी प्रेमियों को गर्व के साथ प्रस्तुत किया जा सके। भाषा शैली ऐसी जो एक साधारण हिन्दी पाठक से

लेकर हिन्दी के विद्वान तक के लिए विवेकयोग्य है।

अंत में अपने धर्मगुरु (पीर मुशिर्द) हजरत मौलाना अलहाज शाह अहमद अली फिरदौसी सिमलवी सज्जादानशीं (मठाधीश) ख़ानक़ाहे शर्फ जमशेदपुर का आभारी हूं जिनकी कृपादृष्टि व देन से ख़ानक़ाह का हर एक विभाग प्रगति की ओर अग्रसर है। उनके उत्तराधिकारी शहज़ादा पीरे तरीकत हजरत मौलाना शाह हस्सान अहमद उसमानी फिरदौसी साहब का भी आभारी हूं जिनकी रात दिन की मेहनत व लगन से मकतबा फिरदौसिया को विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है।

शाह मसरुर उसमानी

मकतबा फिरदौसिया

ख़ानक़ाहे शर्फ, जाकिरनगर,

जमशेदपुर (झारखंड)

प्राक्कथन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

संपूर्ण सराहना एवं ईश्वर वंदना अल्लाह तआ़ला के लिए जिसने आज्ञापालन और भक्ति की क्षमता प्रदान की और दरूदो सलाम रसूलेखुदा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अ़लैहि वसल्लम पर और उन के आल व असहाब पर जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की आज्ञापालन करने का सत्य मार्ग दिखाया।

हज़रत मख़दूमे जहाँ अपनी व्यस्तता और सार्वजनिक जीवन जीते हुए भी संसार को उच्चतम और सर्वोत्तम कोटि की ऐसी पुस्तकें और रचनायें प्रदान की हैं कि जिन को पढ़ कर मन झूम उठता है, बात हृदय को छू जाती है और अन्तरात्मा इस महान आत्मा को कोटि-कोटि नमन करने को व्याकुल हो उठती है।

इस पुस्तक की लाभदायकता पर कुछ लिखना अनुपयोगी है क्योंकि इस पुस्तक का संबंध हज़रत मख़दुमे जहाँ शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी रहमतुल्लाह अ़लैहि से है।

''फ़वायदुल मुरीदीन'' फ़ारसी भाषा में थी और इस पुस्तक के महत्त्व को समझते हुए और लोगों के सुधार के लिए इस पुस्तक का उर्दू अनुवाद आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व 1963 ई० में हमारे पिता हज़रत शाह क़सीम उद्दीन अहमद फ़िरदौसी बलख़ी रहमतुल्लाह अ़लैहि के क़लम से हुआ था। जो हलक़ए तसनीफ़ ख़ानक़ाह मोअज़्ज़म बिहार शरीफ़ से 5 रमज़ानुल मुबारक 1383 हि0/1963 ई0 में पहली बार उर्दू भाषा में प्रकाशित हुआ और इस का दूसरा संस्करण 25 रमज़ानुल मुबारक 1408/ हि0/ 1987 ई0 में हज़रत जनाब हुज़ूर सय्यद शाह मोहम्मद अमजाद फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैहि के अहदे सज्जादगी में हज़रत मौलाना जनाब हुज़ूर सय्यद शाह सैफ़ उद्दीन फ़िरदौसी वर्तमान सज्जादानशीं के कोशिश व काविश से प्रकाशित होकर लोकप्रिय हुआ। जो इस पुस्तक के विशेषता की बहुत बड़ी दलील और सुबूत है।

इस पुस्तक में 22 बिन्दुओं पर चर्चा की गई है और संक्षेप में कलिमए तैयबा, दरूद शरीफ़, इस्तिग़फ़ार, नमाज़ बा जमात, सूरह फ़ातिहा और आयतलकुर्सी की फ़ज़ीलत, मौत और जाँकनी की तलख़ी, क़ब्र की कैफ़ियत, मुनकिर-नकीर के सवाल, बहिशत, दौज़ख़, क़यामत, सब्र, मुसीबत और ग़ीबत का ब्यान, वालिदैन, ज़ौजेन, हमसाया, पड़ोसी, ख़िदमतगारों और गुलामों के अधिकार, इत्यादि जैसे सभी महत्वपूर्ण बातों का सारांश इस महान पुस्तक में इकट्ठा कर दिया गया है।

सर सय्यद अहमद ख़ाँ का यह कथन शत प्रतिशत सत्य सिद्ध हो चुका है कि जिस काल में जिस भाषा का उत्थान होता है वही भाषा उस काल के लिए इख़तियार की जाती है यह एक व्यापक नियम है कि जिस देश में जो भाषा हुकूमत करती है उसी भाषा का उत्थान होता है।

आज देश के सभी संस्थाओं और कार्यालयों में उर्दू और अंग्रेज़ी का स्थान हिन्दी भाषा ले रही है और आ़म जनता भी इस भाषा का प्रयोग अधिक कर रहे हैं। हिन्दी की बढ़ती हुई प्रसिद्धि को सामने रखते हुए मैंने यह निर्णय लिया है कि मख़दूमे जहाँ की लिखित और संकलित रचनाओं का हिन्दी भाषा में अनुवाद करके प्रकाशित करूँ।

यूँ तो इस पुस्तक की सिलसिल-ए-फ़िरदौसिया के श्रद्धालुओं में बहुत माँग रहती है लेकिन इधर कुछ दिनों से हमारे सुमित्रों एवं सम्बन्धियों की असीम इच्छा

थी कि इस अनमोल और बहुमूल्य पुस्तक को हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया जाता। अब जब कि उर्दू की ओर से आ़म मुसलमानों की दिलचस्पी कम होती नज़र आ रही है इस लिए भी हमारे मित्रों और बुद्धिजीवियों ने मुझसे आग्रह किया कि इस पुस्तक को शीघ्र हिन्दी भाषा में अनुवाद कर दें ताकि हिन्दी ज्ञानी जो आसानी से उर्दू पढ़-लिख नहीं सकते हैं। हमारे मख़दूमे जहाँ की ऐसी महान रचनाओं और पुस्तकों से लाभ उठा सकें और अपनी दीन दुनिया को सवांर कर अल्लाह तआ़ला के निकट हो सकें।

आज समाज सुधार की जितनी आवश्यकता महसूस की जा रही है और प्रत्येक संस्था के ज़िम्मेदार व्यक्ति अपने भाषण, लेख, आंदोलन ओर एजीटेशन का विषय बना रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि ख़नकाहें भी इस महम्वपूर्ण विषय पर विचार करें और इस सिलसिले में अपना क़दम उठायें।

ज़रुरत है कि इन महापुरूषों की सम्पूर्ण लिखित और संकलित रचनाओं, आप के प्रवचनों, पत्रों, जीवन और शिक्षाओं को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करें। इस महान् और महत्वपूर्ण आवश्यकता को साहिबे सज्जादा हज़रत मख़दूम मुनअ़म पाक ख़ानक़ाह मुनएमीया, क़मरीया, मीतन घाट, पटना सिटी यानि माननीय श्रीयुत हज़रत मौलाना सय्यद शाह शमीम उद्दीन अहमद मुनएमी साहेब ने भी महसूस किया और उन्होंने "हज़रत मख़दूमे जहाँ जीवन और संदेश" नाम की पुस्तक लिख कर हिन्दी भाषियों पर बड़ा उपकार और एहसान किया है। यह पुस्तक हिन्दी भाषा में होने के कारण काफ़ी लोकप्रिय हुई।

हज़रत मख़दूमे जहाँ ने आज से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व इस की आवश्यकता को महसूस किया था और समाज सुधार के लिए अपनी इस ख़ामोश आंदोलन की पृष्ठ भूमि में यह पुस्तक लिखी लेकिन मैं समझता हूँ कि इस समय इन पुस्तकों की आवश्यकता आ गई है और इसी आवश्यकता को सामने रखते हुए अल्लाह तआ़ला की कृपा और दया पर भरोसा करते हुए हज़रत मख़दूमे जहाँ और अपने धर्मगुरू दादा हुज़ूर हज़रत सय्यद शाह इब्राहीम हुसैन शरफ़ी फ़िरदौसी बलख़ी रहमतुल्लाह अ़लैहि के क्षत्र छाया में और अल्लाह तआ़ला की दी हुई तौफ़ीक़ से मैंने इस पुस्त्क के हिन्दी अनुवाद करने की ज़िम्मेदारी को किसी हद तक पूरा करने की कोशिश की है और निर्णय किया है कि मखदूमे जहाँ की सभी पुस्तकों का सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद करके प्रकाशित कर दूँ। "फ़वायदुल मुरीदीन" का अनुवाद जो आप के हाथों में है उसी की एक कड़ी है। यहाँ पर यह बताता चलुँ कि फ़वायदुल मुरीदीन का यह अनुवाद आज से लगभग चार वर्ष पूर्व हो चुका था लेकिन यह पुस्तक अब तक प्रकाशित न हो सकी। इसलिए कि किसी पुस्तक को छपवाने में जो बारे गिरां आता है उसके लिए हालात साज़गार नहीं थे। पिछले साल ख़ानक़ाहे शरफ़ ज़ाकिर नगर, जमशेदपुर, झारखण्ड के वार्षिक उर्स के अवसर पर हज़रत मौलाना सय्यद शाह अहमद अली फ़िरदौसी सिमलवी सज्जादा नशीं ख़ानक़ाहे शरफ़ जमशेदपुर के साहिबज़ादगान ने जब यह इच्छा प्रकट की कि हज़रत मख़ूदमें जहाँ की किसी पुस्तक का अनुवाद हमें भी इनायत किया जाए। ताकि मक्तबए फ़िरदौसिया, ख़ानक़ाहे शरफ़, जमशेदपुर से भी इसको प्रकाशित किया जा सके। फ़वायदुल मुरीदीन का यह हिन्दी अनुवाद तैयार था मुनासिब माअ़लूम हुआ कि इसे मकतबए फ़िरदौसिया ख़ानक़ाहे शरफ़ जमशेदपुर की नज़ूर कर दिया जाए ताकि यह

शीघ्र छप कर आम मुसलमानों के लिए फ़ायदा का ज़रिया बन जाए। दुआ है कि मकतबए फ़िरदौसिया के ज़रिए इस पुस्तक की इशाअत की ख़िदमत को हज़रत मख़दूमे जहाँ की बारगाह में शरफ़े क़बूलियत हासिल हो।

मैं न तो फ़ारसी भाषा का ज्ञानी हूँ और न ही हिन्दी भाषा का साहित्यकार। इन सब के बावजूद अपना एक जज़्बा है जिसने मुझको अनुवाद करने की हिम्मत के लिए प्रेरित किया।

हम इस बात से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कि अनुवाद करना कोई आसान काम नहीं है। वह भी मेरे लिए और फिर हज़रत मख़दूमे जहाँ की पुस्तकों का अनुवाद? मेरी यह प्रथम कोशिश किस हद तक सफ़ल हुई है इस पुस्तक के पाठक और साहित्यकार ही समझें।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक सब के लिए लाभदायक सिद्ध होगी और इस की बरकत से कुमार्गता और पथभ्रष्टता के सैलाब को रोका जा सकेगा। बल्कि मेरा श्रद्धा और ईमान है कि जिस ने इस पुस्तक की रौशनी में अपने आप को संवारने की कोशिश की अल्लाह तआला उसकी ज़रूर सहायता करेगा और वह देखेगा कि दीनी और दुनयवी सुख सामग्री का कितना बड़ा कोष उसके हाथ में आता है और शायद खुद इस पापाचार के लिए भी यही पुस्तक मुक्ति का कारण हो। मैनें इस पुस्तक की इफ़ादीयत में इज़ाफ़ा की ख़ातिर पुस्तक के आख़िर में इशारिया पेश कर दिया है। ताकि रिसर्च करने वालों के लिए मवाद प्राप्त हो।

इस पुस्तक की तैयारी में मैं अपने बड़े भाई डॉक्टर मौलाना हज़रत शाह अ़ली अरशद शरफ़ी साहिबे सज्जादा आस्तान-ए-हज़रत मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बलख़ी फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अ़हैहि का हार्दिक आभारी रहूँगा कि इन्होने अपनी व्यस्तता के बावजूद समय निकाल कर इस पुस्तक पर दृष्टि डाली और अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। वास्तव में अगर इनका प्रोत्साहन न होता तो मुझ जैसे हीन अनुचर से कुछ भी न होता। मैं अपने अम्मु मोहतरम माननीय श्रीयुत डॉक्टर मौलाना हज़रत सय्यद शाह तलहा रिज़वी बर्क़ साहेब का भी हार्दिक आभारी हूँ कि इन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजूद समय निकाल करएक क़त्अ़ए तारीख़ लिख कर इनायत किया। अल्लाह तआ़ला हज़रत मख़दूमे जहाँ और पीराने फ़िरदौसिया के वसीले से इनके इस पूण्य सेवा को स्वीकार करे।

अपने भतीजा सय्यद शाह अहमद ग़ज़ाली के लिए भी हृदय से दुआयें निकलती हैं जिन्होंने इस पुस्तक के मसवदे को साफ़ किया और बड़ी मेहनत से इस पुस्तक की पुरूफ़ रिडिंग का काम अकेले पूरा किया। अल्लाह तआ़ला इन्हें फख़रे ख़ानदान बनाए।

आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि इस पुस्तक में आप की दृष्टि में कोई त्रुटि नज़र आये तो मुझे क्षमा कर सूचित करने की कृपा करें ताकि भविष्य में इस का सुधार हो सके। इस पुस्तक से जिन लोगों को भी लाभ पहुँचे मेरा उन से निवेदन है कि अकेला न खाने के सिद्धांत पर मेरे लिए भी आक़िबत बख़ैर की दुआ ज़रुर करेंगे।

सैयद शाह आ़बिद अ़ली शरफ़ी फ़िरदौसी
गुलज़ारे इब्राहीम
भैंसासुर, बिहार शरीफ़
24, ज़िलहिज्जा 1426 हिजरी

"हज़रत मख़दूमे जहाँ एक दृश्य में"

शुभ नाम	अहमद
उपाधि	मख़दूमे जहाँ
पद्‌वी	शरफ़ुल हक़ वद्दीन
जन्म	26 शाबान 661 हिजरी/1263 ई०
जन्म स्थान	मनेर शरीफ़, जिला पटना
पिता श्री	कमाल उद्दीन
माता श्री	बीबी रज़िया, उपनाम बड़ी बुआ (पुत्री प्रसिद्ध सूफ़ी संत शैख़ शहाब उद्दीन पीर जगजोत)
पत्नी	बीबी बादाम (सुपुत्री हज़रत मौलाना शरफ़ुद्दीन अबू तवामा)
सुपुत्र	ज़की उद्दीन
गुरू	हज़रत मौलाना शरफ़ुद्दीन अबू तवामा
धर्म गुरू (पीरो मुर्शिद)	हज़रत ख़्वाजा नजीब उद्दीन फ़िरदौसी
स्थान, साधना और तपस्या	12 वर्ष बिहीया जंगल, 20 वर्ष तक राजगीर जंगल और ख़ानक़ाह मुअज़्ज़म बिहार शरीफ़
समकालीन	शैख़ नसरीरूद्दीन महमूद, चिराग़ देहल्वी, हज़रत अमीरे कबीर मीर सय्यद अली हमदानी, सय्यद अहमद चिरमपोश सोहरवर्दी, हज़रत मख़दूम जहानियाँ जहानेगश्त, सय्यद जलाल उद्दीन बोख़ारी, ख़्वाजा बहा उद्दीन नक़्शबन्दी, ख़्वाजा अला उद्दीन समनानी, ओहद उद्दीन असफ़हानी
कुल आयु	121 वर्ष
मृत्यु	6 शव्वाल 782 हिजरी/1380 ई० वृहस्पतिवार की रात
मज़ार मुबारक	बड़ी दरगाह, बिहार शरीफ़, नालन्दा
वार्षिक उर्स	5 शव्वाल
वर्तमान सज्जादानशीं	जनाब हुज़ूर सय्यद शाह सैफ़ उद्दीन फ़िरदौसी

दीबाचा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

बेहद व लातादाद हम्दो सना उस पर्वदीगार को जिसने **ल-क़द् ख़्-लक़्-नल इन्सा-न फ़ी अहसनि तक़्वीम** की आबयारी से वुजूदे इन्सानी को बहार बख़्शी और सजावट दी अपने दोस्तों के ग़ुनचा-ए-दिल को **युहिब्बुहुम् व युहिब्बून हू** को नसीमे जाँफ़िज़ा से मुतबस्सिम फ़रमाया उन की ज़बान खुश बयान को **यज़्कुरूनल्ला-ह क़ियामव-क़ुवअ़दंव्** के नग़मा-ए-दिलावेज़ से तरन्नुम रेज़ किया और कसीर सलातो सलाम तहैय्यत दवाम तहायफ़े फ़ाख़िरा सर्वरे काइनात, सदर मसनदे शरीअ़त आसमाने तरीक़त के बदरे कामिल आ़रिफ़ाने हक़ीक़त के सरताज खामिज़े **औहा** के महरमे राज़ बोस्ताने **क़ा-ब क़ौसैनि औ अद्ना** की नसीमे जाँफ़िज़ा के हमदम महबूबे रब्बे दो जहाँ को उन के जसदे अतहर को और रौज़ा-ए-मोतहरा महबूबे रब्बे अकबर को खुसूसन बाअ़से रश्क इत्रो अ़म्बर मुक़्तदा व रहनुमा कलमए **लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** बोस्ताने फ़साहत के अ़न्दलीब **अना अफ़्सहुल अ़रब वल अ़जम** के शायाने शान **सुब्हानल्लज़ी अस्रा** की बुलन्दी के शहबाज़ बुलन्द परवाज़ क़ाफ़े क़ुर्ब **सुम्-म दना फ़-त-दल्ला** के सीमुर्ग़ की रूहे पाक को और उन के असहाबे मुकर्रम और खुलफ़ाए मुअ़ज़्ज़म की अरवाहे पाक को जो बादए ईमान के बला नोश और अ़ज़ीमतो एहसाँ के अ़न्दलीब ख़ुशनुमा हैं।

सलातो सलाम इस शुमारा में हो जितनी बारिश की फुआर होती है और जितने क़तरे बनते हैं और जब तक लैलो नहार का काइनाती सिलसिला जारी है। ऐ अल्लाह सलातो सलाम इस समय हो और हमेशा होता रहे।

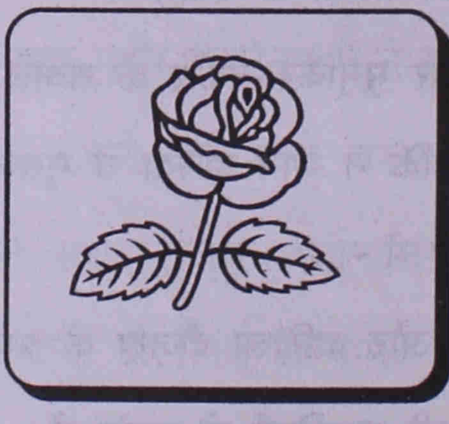
बाद हम्दो सना और सलातो सलाम के यह चन्द बेहतरीन फ़वायद और मरग़ूब तरीन इबादते बन्दगी शैखुल मशायेख़ क़ुतबुल अक़ताब हज़रत मख़दूम शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी मतअ़अल्लाहुल मुस्लमीन बतूल बक़ा यहि ने ख़िद्मत गुज़ारों, मुरीदों और तालिबाने सादिक़ के लिए मुरत्तिब फ़रमाए हैं। जो इस फ़वायद को तहक़ीक़ की नज़र से मुतालआ़ करे वह देखे, जो देखे और पाए, जो पाए अल्लाह तौफ़ीक़ देने वाला है तमाम ताक़तें उसी की ओर से हैं। वह आ़ला है और अ़ज़्मत वाला है। यह किताब **फ़वायदुल मुरीदीन** बाइस ज़िक्रों पर मुरत्तिब फ़रमाई गई है।

○○○

(1) कलिमए तैयबा की फ़ज़ीलत के बयान में

हज़रत अबी दरदा(रज़०अ़०) पैग़मबर *सल्लल्लाहो अ़लैहि वसल्लम* से रिवायत करते हैं कि जब मोमिन **लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह०** कहता है तो अल्लाह पाक दो फ़रिश्ते पन्ने की भांति हरे रंग के परिन्दे के रूप में उस बन्दा के मुँह से बाहर निकालता है। जिन के बाज़ू और पंख की बुज़ुर्गी ऐसी है कि एक पूरब और दूसरा पश्चिम। अगर वह अपने दोनों पंखों को खोल दें तो पूरब से पश्चिम तक पहुँच जायें। वह फ़रिश्ते उपस्थित होकर आकाश के नीचे पहुँचते हैं। उनकी आवाज़ मधु मख्खियों जैसी होती है। वह सारे फ़रिश्ते जो आकाश में हैं उन से कहते हैं कि ठहर जा अल्लाह के हुक्म से ख़ामोश और स्थिर हो जा। वह फ़रिश्ते कहते हैं कि जब तक अल्लाह पाक **लाइला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह०** कहने वाले को मुआ़फ़ न कर देगा मुझे सुकून न आयेगा। अल्लाह पाक फ़रमाता है कि बेशक और यक़ीनन मैं ने **लाइला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** कहने वाले को बख़्श दिया फिर अल्लाह पाक उन फ़रिश्तों को सत्तर हज़ार ज़बान अ़ता करता है वह उन तमाम ज़बानों से उस बन्दा के लिए क़ियामत तक बख़शाएश तलब करते रहते हैं। जब क़ियामत क़ाइम होगी तो वह फ़रिश्ते आयेंगे और उस बन्दा का हाथ पकड़ कर पुल सरात से गुज़ार कर बिहिशत में प्रवेश कर देंगे।

विषय-सूची



हज़रत अबू अबदुल्लाह तरालकी (*र०अ०*) से नक़ल है कि **लाइला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** के 24 अक्षर हैं और रात और दिन के 24 घंटे हैं। जब बन्दा सच्चे हृदय से **लाइला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** कहता है तो अल्लाह पाक फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दे यह कलिमा जो तू ने कहा इसके 24 अक्षर हैं। रात और दिन के 24 घंटे हम ने बनाए हैं। जितने गुनाह तू ने छुप कर या खुले हो कर, छोटे या बड़े, जान कर या बे जाने, कौ़लन (*वचन*) या फ़ेअ़लन (*कर्म*) किए हैं इस कलिमए **लाइला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** के हुर्मत से हम ने वह सब मुआफ़ कर दिए।

पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने कलिमए तैयबा **लाइला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** ख़ालिसन और मुख़लिसन कहा वह बिहिशत में दाख़िल हुआ। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* से लोगों ने पूछा कि क्या बिहिशत की क़ीमत है? पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि है लाइला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलल्लाह बिहिशत की क़ीमत है। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* से रिवायत है फ़रमाया कि अल्लाह पाक ने अपने पैग़म्बरों में से एक पैग़म्बर पर वही भेजी कि ऐ मेरे बन्दे **लाइला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** मेरा हिसार है जो व्यक्ति मेरे हिसार (*घेरा*) में दाख़िल हुआ वह मेरे अज़ाब से

सुरक्षित हो गया। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* से रिवायत करते हैं कि एक जमाअत में हुजूर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि तुम लोग अपनी ढालें लाओ। उन लोगों ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह दुशमन के लिए?

आदेश हुआ नहीं दौज़ख़ की आग के लिए। लोगों ने पूछा कि दौज़ख़ की आग के लिए ढाल क्या है?

आदेश हुआ **सुबहानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि व ला-इला-ह-इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौला वला कूव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अ़ली इल्अ़ज़ीम०**

हज़रत अबी मकतह एमाम यूअ़ला(*र०अ़०*) से रिवायत है कि उन्होंने ने अर्ज़ की कि या रसूल अल्लाह लोग सदक़ा (*दान*) देते हैं मेरे पास कोई चीज़ अपनी ओर से सदक़ा देने के लिए नहीं है लेकिन मैं **सुबहानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि व ला-इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौला वला कूव व-त इल्ला बिल्लाहिल अ़ली इल्अ़ज़ीम०** पढ़ा करता हूँ। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि यह कलिमात तुम्हारे लिए इस से बेहतर हैं कि तुम एक मन सोना मिस्कीनों (*दरिद्रों*) को ख़ैरात करो और पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि यह दो कलिमे **सुबहानल्लाहि व बेहमदेहि व सुबहानल्लाहिल अ़ली इल्अ़ज़ीम व बेहमदेहि०**

ज़बान पर बहुत सबुक (*हलका*) हैं और तराज़ू के नेकी के पल्ला पर बहुत वज़न दार हैं और यह अल्लाह पाक के निकट पसन्दीदा (*वांछनीय*) हैं। हदीस शरीफ़ में है कि जो व्यक्ति रोज़ाना एक सौ बार **सुबहानल्लाहि व बेहमदेहि** पढ़े उसके गुनाह दूर होते हैं यद्यपि उसके गुनाह दरिया के झाग के बराबर हों। अल्लाह बेहतर जानता है।

(2) दरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत के बयान में

हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि इस धरती पर जितने मुसलमान हैं उन में से जो भी हज़रत मुहम्मद *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* पर एक बार दरूद शरीफ़ भेजता है तो मैं जो खुदा वन्द मालिक हूँ और मेरे फ़रिश्ते उस बन्दा पर दस बार दरूद भेजते हैं। अल्लाह पाक का दरूद भेजना रहमत भेजना है और फ़रिश्तों का दरूद भेजना बख़शाइश चाहना है। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया है कि हर एक दुआ़ और आकाश के बीच एक पर्दा बाक़ी रहता है। हुज़ूर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* और आप की सन्तान पर दरूद के साथ जब दुआ़यें जाती हैं तो दरूद शरीफ़ के कारण वह पर्दा हट जाता है और दुआ़यें महले क़बूलियत तक पहुँच जाती हैं और जिस दुआ़ के बाद दरूद शरीफ़ न पढ़ा जाए वह दुआ़ वापस लौट आती है। हदीस शरीफ़ में है कि मेरे विसाल (*निधन*) के बाद भी तुम में से जो व्यक्ति मुझ पर सलाम भेजेगा तो

जिबरइल सलातुल्लाह मुझ से कहेंगे कि या मुहम्मद *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* फ़लाँ इब्न फ़लाँ ने आप पर सलाम, भेजा है तो मैं कहूँगा **व अ़लैकुमुस्सलामु व रहमतुललाहि व ब-र-कातुहू**

हुजूर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* से मनक़ूल है कि अल्लाह तआ़ला ने दो फ़रिश्ते तैनात (*नियुक्त*) किए हैं कि जो व्यक्ति मेरा ज़िक्र (*चर्चा*) किसी के सामने करता है और सुनने वाला मुझ पर दरूद भेजता है तो वह दोनों फ़िरिश्ते दुआ़ करते हैं कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें बख़्श दे और उन के अ़लावा (*अतिरिक्त*) सम्पूर्ण दूसरे फ़रिश्ते आमीन कहते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि जिस काग़ज़ पर मेरा दरूद शरीफ़ लिखा गया हो जब तक मेरा नाम उस काग़ज़ में रहेगा फ़रिश्ते लिखने वाले के लिए मग़फ़िरत चाहते रहेंगे। हज़रत एमाम शाफ़अ़ई (*रज़०अ़०*) को लोगों ने स्वन्प में देखा और उनसे पूछा कि ऐ एमामुल मुसलमीन ख़ुदा वन्द तआ़ला ने आप के साथ क्या मआ़मला किया? उत्तर दिया कि मुझे उसने बख़्श दिया। पूछा किस सिला में?

फ़रमाया कि वह पाँच-दरूद (दरूद *ख़मसा*) जो हम ने पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* पर हदया (*नज़्र*) किया था। अ़र्ज़ किया कि वह पाँच-दरूद क्या है? फ़रमाया कि वह दरूद शरीफ़ यह है-

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला सय्यिदे-ना मुहम्मदिन बे अ़ददे मन सल्लि अलैहि व सल्लि अ़ला सय्यिदे-ना मुहम्मदिन बे अ़ददे मल लम युसल्लि अ लैहि व सल्लि अ़ला सय्यिदे-ना मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु व तर्ज़ा अन तुसल्लिी अ़लैहि व सल्लि अ़ला सय्यिदे-ना मुहम्मदिन क-मा यन् बग़ी अस-स-ला-तु लैहि व सल्लि अ़ला सय्यिदे-ना मुहम्मदिन क-मा अमर-त-ना बिस्सलाते अ़-लैहि०

हज़रत उसमान ग़नी (*रज़०अ़०*) ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति जुमा के दिन एक सौ बार पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* पर दरूद शरीफ़ भेजता है तो कि़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला उस बन्दा को इस क़द्र नूर अ़ता करे गा कि जो नूर संसार वालों को प्रदान किया जाएगा उस के आधा के बराबर होगा। हदीस शरीफ़ में है कि जो व्यक्ति जुमा के दिन पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* पर एक सौ बार दरूद भेजे तो ख़ुदा वन्द तआ़ला उस के गुनाहों को बख़्श देगा अगरचे उसके गुनाह दरया के झाग के बराबर हों।

हज़रत अनस (*रज़ी०अ़०*) से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया हुज़ूर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने कि जुमा के दिन जो व्यक्ति मुझ पर एक सौ बार दरूद शरीफ़ भेजता है तो ख़ुदा वन्द तआ़ला सौ हाजतें उस की पूरी फ़रमाता है सत्तर हाजतें संसार की और तीस आख़िरत (परलोक) की।

(3) इस्तिग़फ़ार (क्षमायाचना) की फ़ज़ीलत के बयान में

जिस बन्दा को इस्तिग़फ़ार की तौफ़ीक़ प्राप्त है इस का मतलब यह है कि वह मग़फ़्रित से वंचित नहीं है।

हदीस शरीफ़ में है कि बेहतरीन दुआ़ इस्तिग़फ़ार है। इस्तिग़फ़ार से गुनाह कबीरा, सग़ीरा के दरजा को पहुँच जाते हैं और इस्तिग़फ़ार न करने से गुनाह-सग़ीरा, कबीरा की श्रेणी तक पहुँच सकते हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़(र०अ़०) ने अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह मुझे कोई दुआ़ बताई जाए कि नमाज़ों में पढ़ा करूँ, हुक्म हुआ कि **अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव- व ला यग़्फ़िरूज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन-त फ़ग़्फ़िर ली मग़्फ़िरतम मिन अ़िन्दि-क वर्हम्नी इन्न-क अन्तल ग़फ़ूरूर्रहीम०** पढ़ा किजीये। नक़ल है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* रोज़ाना एक सौ बार इस्तिग़फ़ार करते और कहा गया है कि जो व्यक्ति **अस्तग़्फ़िरूल्ला हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमल मुस-त ग़ि-सी-न वस्तग़्फ़िर व अतुबू ए लैहि० इन्नहु हुवत-तव्वाबुर्रहीम०** एक बार पढ़ता है तो उस के गुनाहों की बख़्शायश का सबब होता है और जो दो बार पढ़ता है तो उसके माँ और बाप के गुनाहों की भी आमुर्ज़िश (*मुक्ति*) का कारण होता है और जो तीन बार पढ़ता है तो तमाम उम्मत के गुनाहों की बख़शाइश का सबब होता है। कहते हैं कि सय्यदुल इस्तिग़फ़ार यह है **अस्तग़्फ़िरूल्ला- हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतुबू ए लैहि०**

(4) जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत और तर्क (त्याग) जमाअ़त की वईद के बयान में

हज़रत पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* का आदेश है कि जो व्यक्ति 40 रोज़ तक नमाज़ बा जमाअ़त इस प्रकार पढ़ता है कि पहली तकबीर पाता है तो उस के लिए दो नजात लिखी जाती है। एक से दौज़ख़ की आग से छुटकारा होता है और दूसरे से दैवी प्रकोप यानी ग़ैबी अ़ज़ाब से। हदीस शरीफ़ में है कि नमाज़ बा जमाअ़त का घ्यान रखो। हर वह मोमिन जो कि इमाम के साथ पहली तकबीर में शरीक रहता है यह उस के लिए सौ हजार हज और सौ हज़ार उमरे से उत्तम है। हदीस शरीफ़ में है कि नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ना सुन्नते मोअ़क्कदा है। इस को अग़र कोई छोड़ता है तो मुनाफ़िक़ ही छोड़ता है। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि नमाज़ पंजगाना की मिसाल पाँच आबशार (*झरना*) की है जो तुम में से किसी के दरवाज़े पर जारी हो। उस के पानी की ज़ियादती का क्या कहना जब कि वह व्यक्ति प्रत्येक दिन पाँच बार उस में स्नान करे तो क्या उस व्यक्ति के शरीर में मैल का कुछ हिस्सा बाक़ी रहेगा? हदीस शरीफ़ में है कि जो व्यक्ति यह चाहता है कि अल्लाह पाक उस को सुरक्षित रखे तो उस को कह दो कि वह पांचों समय की नमाज़ की सुरक्षा किया करे हज़रत मआ़ज़ (*रज़ी०अ़०*) से मनक़ूल है कि वह कहते हैं कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* मेअ़राज की रात में जब पहले आसमान पर तशरीफ़ ले गए तो देखा कि

फ़रिश्ते तकबीर में मशग़ूल हैं उन की यह मशग़ूलियत उस समय से जारी थी जब से अल्लाह पाक ने उन को पैदा किया था और दूसरे आसमान पर देखा कि सभी फ़रिशते क़्याम में हैं और वह उस समय से क़्याम में हैं जब से वह पैदा हुए हैं और तीसरे आसमान में फ़रिशतों को देखा कि वह सब क़िरात में हैं और जब से पैदा हुए हैं उस समय से इसी हाल में हैं। चौथे आसमान में फ़रिशतों को देखा कि सभी फ़रिशते रुकुअ़ में हैं और यह इस रुकुअ़ में उस समय से हैं जब से अल्लाह ने उन को पैदा किया है फिर पाँचवें आसमान पर फ़िरिश्तों को देखा कि वह सब के सब क़ौमा में हैं और इस क़ौमा में उस समय से है जब से वह पैदा हुए हैं। फिर छटे आसमान में फ़रिशतों को देखा कि सजदा में हैं और उस समय से सजदा में हैं जब से पैदा किए गए हैं और सातवें आसमान में फ़रिशतों को देखा कि वह सब के सब तसबीह में हैं और उस समय से तसबीह कर रहे हैं जब से अल्लाह ने उन को पैदा किया है और **अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह** कह रहे हैं और यह सिलसिला उन का उस समय से जारी है जब से उन की तख़लीक़ हुई है उस स्थान पर मुहम्मद *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* के दिल में यह बात आई कि मेरी उम्मत के लिए ऐसी इबादत का आदेश होता जिस के द्वारा यह सभी नेअ़मतें प्राप्त होतीं। इसी बिना पर अल्लाह तआ़ला ने यह फ़ज़ल नमाज़ में शमिल फ़रमा दिया अतः जो पाँचों समय नमाज़ पढ़ा करता

है वह ख़ुश क़िस्मत हैकि सातों आसमान के फ़रिशतों का सवाब उस के हिस्से में आता है। नक़ल है कि जब मोमिन सुब्ह की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ता है तो हर रकअ़त के बदले में दो हज़ार सिद्दीकों (*सत्य निष्ठों*) का सवाब उस के नाम में लिखा जाता है और अगर वह इस नमाज़े सुबह और ज़ोहर की नमाज़ के बीच मरता है तो शहीदों का दर्जा पाता है और ज़ोहर की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ता है तो हर एक रकअ़त के बदले में बारह हज़ार फ़रिश्तों और सिद्दीकों का सवाब उस के नाम लिखा जाता है और अगर वह ज़ोहर और अ़सर के बीच मर जाए तो शहीदों का दरजा पाए और जो व्यक्ति अ़सर की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ता है तो हर रकअ़त के बदले में ऐसे हज और उमरे का सवाब जो के इसी वर्ष किया गया हो उस के नाम लिखा जाता है और अगर वह अ़सर और मग़रिब की नमाज़ के बीच मरे तो शहीद मरेगा और जो मग़रीब की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ता है तो हर रकअ़त के बदले में ऐसे हज और उमरे का सवाब जो इसी वर्ष किया गया हो उस के नाम लिखा जाता है और अगर वह मग़रिब और ईशा की नमाज़ के बीच मरे तो शहीद मरेगा और जो व्यक्ति ईशा की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ता है तो हर एक रकअ़त के बदले में वह सवाब प्राप्त होता है जो हज़रत इसमाईल *अ़लैहिस्सलाम* के पुत्रों में से किसी को छः ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब प्राप्त हो और अगर वह इस ईशा और सुबह की

नमाज़ के बीच मरे तो शहीदों की श्रेणी में प्रवेश होता है।

जमाअ़त के साथ नमाज़ को त्याग करने की वईद (*यानी हुक्म अ़ज़ाब*) के संबंध में रिवायत है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि मोमिन और काफ़िर में कोई फ़र्क़ नहीं है मगर नमाज़ के त्याग देने का है।

हदीस शरीफ़ में है कि जिस किसी ने जानकर नमाज़ का त्याग किया तो बेशक उस ने कुफ़्र किया और यह सच है कि यह काफ़िराना हरकत है (*अल्लाह पनाह दे ऐसी हरकतों से*) हदीस शरीफ़ में है कि जिस ने पांचों समय की नमाज़ पढ़ी तो उस की बख़्शाइश होती है और दौज़ख़ की आग से नेजात मिलती है। इस के विपरीत जिस किसी ने जान बूझ कर नमाज़ को त्याग दिया तो उसे कल महाप्रलय के दिन अल्लाह पाक के दीदार से महरुमी होगी और उस की बख़्शाइश नहीं होगी और क़ब्र का मआ़मला फ़िरओन, हामान, क़ारून और उबी इबन ख़ल्फ़ के जैसी होगी जो धिक्कार के योग्य हैं।

(5) आयतल कुर्सी और सूरह फ़ातिहा की फ़ज़ीलत और दूसरे फ़ाइदे के बयान में

नक़ल है कि जब आयतल कुर्सी नाज़िल हुई तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते जो कुर्सी के चारों ओर रहते हैं हज़रत जिबरईल *अ़लैहिस्सलाम* के साथ आए उस समय जिबरईल *अ़लैहिस्सलाम* ने कहा या मुहम्मद *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम*!

अल्लाह तआ़ला का आदेश है कि मेरे बन्दों में से जो बन्दा आयतल कुर्सी पढ़ता है उस के हर अक्षर के बदले हज़ार साल पढ़ने का सवाब उसके नाम पर लिखता हूँ। फ़तावए ज़हीरी में आया है कि जो व्यक्ति घर से निकलते समय एक बार आयतल कुर्सी पढ़ता है तो अल्लाह पाक का आदेश होता है कि सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते जब तक वह घर वापस न लौट आए उस की रक्षा करते रहें और उस के लिए मग़फ़िरत की दुआ़ करते रहें और इसी प्रकार घर में प्रवेश होते समय अगर एक बार आयतल कुर्सी पढ़ले तो अल्लाह तआ़ला उस बन्दा को दरिद्रता (*इफ़्लास*) और विपत्ति से जिस में वह ग्रस्त होने वाला है दूर कर देता है।

नक़ल है कि बुग़दाद में एक बुज़ुर्ग थे, एक रात एकांत पाकर बुज़ुर्ग के घर में दस चोरों ने प्रवेश किया। उन बुज़ुर्ग की पत्नि ने आयतल कुर्सी पढ़कर घर पर दम कर दिया था जिस समय चोरों ने घर में प्रवेश किया अल्लाह तआ़ला ने उन सभों को अंधा कर दिया। वह बुज़ुर्ग जाग रहे थे उन्हों ने देखा और पूछा कि तुम लोग कौन हो? उन चोरों ने कहा कि हमलोग चोर हैं चोरी के इरादा से आए थे कि हम सब अंधे हो गए। ऐ महापुरूष आप दुआ़ कर दें कि हम लोगों की आँखों की रौशनी लौट आए और हम लोग तौबा कर लें और आप के हाथ पर मुसलमान हो जायें। उन्हों ने दुआ़ फ़रमाई और कहा कि आँखें खोलो अल्लाह पाक के आदेश से सब के सब पहले की

तरह देखने वाले हो गए उसी समय उन लोगों ने तौबा की और मुसलमान हुए। नक़ल है कि जो व्यक्ति आयतल कुर्सी पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को बख़्श दे तो अल्लाह तआ़ला उन मुर्दों की क़ब्रों में एक नूर दाख़िल कर देता है और पढ़ने वाले को छः पैग़म्बरों का सवाब देता है। नक़ल है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने कहा कि मैं रात और दिन अपनी उम्मत के अ़ज़ाब से डरता रहता था। जब जिबरईल सलातुल्लाह सूरह इख़लास लाए तो मुझे संतोष हुआ, तो जो सुरह इख़लास पढ़ता है आसमान के नीचे मुनादी निदा करता है कि अल्लाह तआ़ला ने तेरे सभी गुनाहों को बख़्श दिया और तुझे जो हाजत है वह माँग ले ताकि पूरी की जाए। तफ़सीर में है कि सूरह फ़ातिहा की सात आयतें हैं जो व्यक्ति इस को एक बार पढ़ता है गोया उसने दस बार क़ुरान समाप्त किया और जो रात को एक बार पढ़े गोया उसने शबे क़द्र को पाया और जो कि **सूरह तबारकल्लज़ी** को अधिक पढ़ा करे तो महाप्रलय के दिन वह सूरह उस की शफ़ाअ़त करेगी और जो कोई सुबह की नमाज़ और मग़रिब की नमाज़ के समय तीन बार **क़ुल हुवल्लाहु अहद०**

तीन बार **क़ुल आऊ़ज़ु बिरब्बिल फ़-लक़ि०**

और सौ बार **क़ुल अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नासि०**

पढ़ा करे तो अल्लाह तआ़ला उस को मक्कारों के छल-कपट, ईर्षालुओं की ईर्ष्या-डाह और शैतानों की दुष्टता से सुरक्षित रखेगा।

जो व्यक्ति यह चाहे कि उस की अराधना, उपासना और कार्य स्वीकृत हों तो यह आयत

रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीअ़ुल्- अ़लीम० पढ़ा करे और जो यह चाहे कि दोनों लोक की नेकी उसको प्राप्त हो और नरक की आग से मुक्ति पाए तो यह आयत

रब्बना आतिना फ़िद-दुनिया ह-स-नतंव व फ़िल आख़ि-रति ह-स-नतंव व क़िना अ़ज़ाबन्नार पढ़ा करे और जो यह चाहे कि हर हाल में धैर्यवान (*साबिर*) रहे और वह सभी कार्यों में दृढ़ता से रहे और शत्रुओं को उस पर सफ़लता न प्राप्त हो तो यह आयत

रब्बना अफ़्रिग् अ़लैना सब्रंव-व सब्बित् अक़दामना वन्सुर्ना अ-लल्- क़ौमिल्-काफ़िरीन० (*बक़र 2-250*) पढ़ा करे और जो यह चाहे कि उस कां दिल ईमान पर क़ायम रहे और ख़ुदा की उसपर रहमत हो तो यह आयत

रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना बअ़-द इज़् हदैतना वह हब् लना मिल्लदुन-क रह-म-तन् इन्न-क अन्तल् वहहाब०(*बक़र-8*)

पढ़ा करे और ज़ो यह चाहे कि अल्लाह तआला के मित्रों के समूह में स्थान प्राप्त हो तो वह यह आयत

रब्बना इन्न-क जामिअ़ुन्नासि लि यौमिल्ला रै-ब फ़ीहि इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल-मीअ़ाद० पढ़ा करे और जिस व्यक्ति की कोई वस्तु खो जाए या लड़का और गुलाम भाग गया हो या यह

चाहे कि परहेज़गार और सुशील लड़का पैदा हो तो यह आयत

रब्बि हब्ली मिल्लदुन-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-ब-तन् इन्न-क समीअुद्दुआ॰

पढ़ा करे और जो यह चाहे कि नेक मर्दों का दर्जा पाए तो यह आयत

रब्बना व आतिना मा वअ़त्तना अ़ला रूसुलिक व ला तुख़लिफ़ुल्-मीआ़द॰

पढ़ा करे और जो यह चाहे कि ज़ालिमों की संगति से मुक्ति पाए तो यह आयत

रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल् क़र्यतिज़्ज़ालिमि अहलुहा वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क वलिय्यंव वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा (*सुरतुन्निसाइ-75*)

पढ़ा करे और जो यह चाहे की बरकत और रहमत उस पर नाज़िल हों और उसकी रोज़ी में वुस्अ़त हो और वह किसी का मोहताज न रहे तो यह आयत

रब्बना अन्ज़िल अ़लैना मा-इद-तम्-मिनस्समा-इतकूनु लना अ़ीदल्लि- अव्वलिना व आख़िरिना व आयतम्-मिन-क वर्ज़ुक़ना व अन्-त ख़ैरूर्राज़िक़ीन॰ (*सूर: माइद: 114*) पढ़ा करे और जो यह चाहे कि दोनों लोकों में ज़ालिमों के गिरोह (*समूह*) में सम्मिलित न हों तो यह आयत

रब्बना ला तज्-अ़ल्ना फ़ित-न-तल्लिल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन०
(*सूर: युनुस 85*) पढ़ा करे और जो व्यक्ति सुबह की नमाज़ में दस बार **ला इला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू ला शरी-क लहू लहुल-मुल्कु व लहुल हम्दु युह्यी व योमीतु व ह-व हय्युल-ला यमूतु अबदन बि-य-दिहिल ख़ै-र व हुव अ़ला कुल्लि शयइन क़दीर०** पढ़े तो अल्लाह तआ़ला दस हज़ार नेकी उसके नाम-ए-आमाल में लिखे और दस हज़ार बदी उसके नाम-ए-आमाल से दूर कर दे और उस दिन वह अल्लाह तआ़ला की सुरक्षा में रहेगा और शैतान उस पर हावी न होगा और जब ग़मगीन और शोक ग्रस्त हो तो तीन बार

ला इला-ह इल्लल्लाहिल अ़लीइल हकीम

ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अ़र्शिल करीम

ला इला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति वल् अर्ज़ि

व रब्बुल् अ़रशिल्-अ़ज़ीम० पढ़े वह खुश दिल और हर्षित हो जाएगा और जो व्यक्ति किसी काम से निराश हो जाए और उसके काम बनने की कोई आशा न हो तो वह रात को एक सौ बार **या फ़त्ताहो या फ़त्ताहो या फ़त्ताहो** पढ़ ले अल्लाह तआ़ला अपने कृपा से उसे मुक्ति देगा। उसे चाहिए कि हर रात को यह पढ़ा करे।

पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने हज़रत अ़ली (*रज़ी०अ़०*) से कहा कि ऐ अ़ली जब तक यह पाँच काम न कर लिया करो रात को सोया न करो। पहला यह कि जब तक चार हज़ार दिरम (चाँदी

का एक सिक्का) मोहताजों को सद्क़ा न दे लिया करो, दूसरे यह कि जब तक हज न कर लिया करो, तीसरे यह कि ज़ब तक क़ुरान समाप्त न कर लिया करो, चौथे यह कि जब तक बिहिश्त की क़ीमत न अदा कर लिया करो, पाँचवें यह कि जब तक दुश्मनों को खुश न कर लो यानी हक़्-कुल एबाद न अदा कर लिया करो। अमीरुलमोमेनीन हज़रत अ़ली(*रज़ी०अ़०*) ने अर्ज़ की कि या रसूल-अल्लाह इतने काम एक रात में कैसे कर सकता हूँ? पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने कहा कि ऐ अ़ली जब रात को सोना चाहो तो सोने से पहले चार बार सूरह फ़ातिहा पढ़ लिया करो गोया तुम ने चार हज़ार दिरम मोहताजों को सदक़ा दे दिया, दूसरे यह कि तीन बार सूरह इख़लास पढ़ लिया करो गोया कि तुमने पूरा क़ुरान समाप्त कर लिया, तीसरे यह कि दस बार दरूद शरीफ़ पढ़ लिया करो गोया कि तुम ने बिहिश्त की क़ीमत अदा करदी, चौथे यह कि पाँच बार **सुबहानल्लाहि वल हमदुलिल्लाहि व ला-इला-ह इल्लल्ला हु वल्लाहु अकबर व ला हौला व्र ला क़ूव-तः इल्ला बिल्लाहिल अ़ली इल्अ़ज़ीम मा य-शा-अ़ अल्लाहा का-न मा-लम यशाओ़ लम यकुन**

पढ़ लिया करो गोया तुम ने हज अदा कर लिया पाँचवें यह कि दस बार **सुबहानल्लाहि बिहमदिहि व सुबहानल्लाहि अ़ली इल्अ़ज़ीम व बिहमदिहि वस्तग़फ़िरूल्लाह रब्बी मिन कुल्ले**

ज़म्बिन व अतूबु इलैहि

पढ़ लिया करो यह तुम्हारे लिए ऐसा होगा गोया कि तुम ने सभी दावेदारों को खुश कर लिया।

(6)मौत और जांकनी की तल्ख़ी के बयान में

हज़रत अन्स(*रज़ि०*) और हज़रत आयशा सिद्दिक़ा(*रज़ि०*) ने अर्ज किया रसूल अल्लाह ऐसा दुसरा कोई है जो शहीदों का दर्जा पाए? फ़रमाया कि हाँ जो शख़्स मौत को इक्कीस मर्तबा याद किया करे।

नकल है कि अगर जानवर ये जानते कि मरना है जैसा कि तुम जानते हो तो कोई व्यक्ति उनके शरीर पर स्थूलता न पाता। नकल है कि जब अल्लाह पाक ने मौत को भैंस की सूरत में पैदा किया तो हुक्म हुआ कि जिस सूरत में तू पैदा की गई है। फ़िरिश्तों की पंक्ति में जा, मौत फ़िरिश्तों की पंक्ति में जा पहुंची, तो कोई फ़रिश्ता ऐसा नहीं था कि जो बेहोश न हो गया हो, और इस बेहोशी में दो दो साल तक वह रहे। जब होश में आए तो कहा ऐ मेरे परवर्दिगार ये क्या चीज़ है? अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि ये मौत है, उन्होनें कहा खुदावन्दा इसको किसलिए तूने पैदा किया है? फ़रमाया कि हर जीव के लिए, अ़र्ज़ की खुदावन्दा संसार तूने किस लिए पैदा किए? हुक्म हूआ ताकि आदम की संतान वहाँ निवास करे, अर्ज़ की कि हमलोगों को ऐसा ख्याल होता है कि जिसके लिए ऐसी वस्तु पैदा की गई हो

वह संसार और स्त्री और संतान में क्यूँ कर व्यस्त होंगे अल्लाहताला ने फ़रमाया कि इनमें अभिलाषाएँ इतनी दीर्घ और प्रभुत्वशाली होंगी ये लोग मौत को भूल कर संसार, नारी और संतान में व्यस्त हो जाएँगे।

हदीस शरीफ़ में है कि फ़रमाया नबीकरीम ने कि हर्ष और आनन्द को विच्छेद करने वाली वस्तु को अत्यधिक याद करो। लोगों ने पूछा कि या रसूल अल्लाह हर्ष और आनन्द को विच्छेद करने वाली वस्तु क्या है? फ़रमाया कि मौत। एक व्यक्ति ने नबी करीम (स०अ०व०) से कहा कि मुझे कुछ वसीयत फ़रमाया जाए। हुक्म हुआ कि मौत को याद करो यहाँ तक कि मास्वा अल्लाह फ़रामोश हो जाएँ, मौत का सामना करने योग्य चिन्ता करो। ताकि संसार की खुशहाली की चिन्ता तुमसे दुर हो जाएँ और दुआ अधिक करो। इस हद तक कि तुम्हें इसके स्वीकृत होने का विश्वास हो जाए और शुक्र नेमतों को बेदाग़ हैं। हज़रत ऊमर ख़त्ताब(रज़ि०) प्रत्येक सुबह को फ़रमाते कि मैं मौत के लिए तैयार हूँ, ऐ मल्कुल मौत मेरी जान ले ले चाहे खड़े खड़े या बैठे हुए। ख़्वाजा इब्राहिम अदहम(रह०) जब चाहते कि घर से बाहर आएँ एक बार बाहर आते और देखते कि मौत की तैयारी हो चुकी है कि नहीं और दरवाज़ा से फिर लौट जाते।

एक महापुरूष का कथन है कि बन्दा जब मौत को याद करता है तो अल्लाह तआला उस बन्दे को चार वस्तुओं का आदर प्रदान

करता है पहली यह कि महाप्रलय की सख़्ती उसके लिए आसान कर देता है। दूसरा वस्तु यह कि संसार की अभिलाषाएँ और संसार की बेकार वस्तुओं से उसे मुक्ति प्रदान करता है। तीसरी वस्तु यह कि तौबा की प्रेरणा देता है और पाप करने से वह रूक जाता है। चौथी वस्तु यह कि अगर उसकी पूजा और आराधना थोड़ी हो अल्लाह उसे अधिककर देता है।

रवायत करते हैं कि पैग़म्बर(स०) का जब यह समय आया यानि मौत की अवस्था के क़रीब हुए तो हज़रत जिब्रैल(अ०) हुज़ूर के सिरहाने बैठे हुए थे पैग़म्बर(स०) देख रहे थे मगर सहाबा कराम को नज़र नहीं आ रहे थे फिर भी वह लोग सुन रहे थे कि पैग़म्बर(अ०) फ़रमा रहें हैं कि ऐ भाई जिब्रैल! तुम मेरे मित्र हो, इसपर भी इस कठिन समय में और मौत की सख़्ती में मुझसे मुँह फेरे हुए हो। जिब्रैल(स०) ने जवाब दिया मुहम्मद(स०) मैं आपका मित्र हूँ और ये भी मालूम है कि मौत की सख़्ती का क्या हाल है? लेकिन दोस्त अपने दोस्त की सख़्ती की हालत में देखने की शक्ति और सार्मथ्य नहीं रखता है। यही कारण है कि मुझसे देखा नहीं जाता। पैग़म्बर(स०) ने फ़रमाया कि अगर एक बाल बराबर भी ये सख़्ती पूरी धरती और आकाश के रहने वालों पर रख दें तो सब के सब मर जाएं। क़्यामत की सत्तर ख़ौफ़नाकियां हैं उनमें से सब से छोटी ख़ौफ़नाकी मौत है।

एक दिन हज़रत ईसा(अ०)हज़रत यहया के मज़ार मुबारक के पास खड़े हुए कहा अल्लाहतआला के हुक्म से उठ ज़ाइए वह बाहर तशरीफ लाए और सिर से मिट्टी दूर फ़रमाई। आधे सर के बाल उनके सफ़ेद हो गए थे। ईसा(*अ०*) ने कहा कि आपके पूरे सर के बाल स्याह थे ये सफेदी कैसी है? आपने फ़रमाया कि जिस समय हमने सुना कि उठ जाओ, ख़्याल हुआ कि महाप्रलय पहुँच गई। उसी के भय और ख़ौफ़ से उजला हो गया है। ईसा(*अ०*) ने कहा कि क्या आप ये चाहते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि आपको संसार में फिर ले आए? जनाब यहया *अलैहिस्सलाम* ने कहा कि इस आत्मीयता की प्रतिष्ठा और सम्मान का वास्ता जो हमारे और तुम्हारे बीच है ऐसा न चाहो क्योंकि जांकनी की तल्ख़ी मेरे कंठ से दूर नहीं हुई है।

रवायत है कि जनाब मूसा(*अ़०*) के पास मल्कुल मौत आए और कहा कि मैं मल्कुल मौत हूँ। मूसा(*अ०*) ने कहा कि थोड़ी मोहलत दो कि मृत्यु के लिए मैं तैयार हो जाऊँ, आदेश हुआ कि कह दो कि बकरी पर हाथ रखें, संख्या में जितने बाल उनके हाथ के नीचे आएँ उतने वर्ष उनको आयु दी गई। मूसा(*अ०*) ने कहा उसके बाद क्या होगा? उत्तर मिला कि मृत्यु। मूसा(*अ०*) ने कहा कि फिर यही समय उचित है, मल्कुल मौत ने एक फूल मूसा(*अ०*) के हाथ में दिया। आपने उसे सूँघा और बस आत्मा शरीर से निकल गई।

उसके बाद किसी ने मूसा(अ०) को सपना में देखा पूछा कि मौत को कैसा पाया कहा कि जिस प्रकार काठ में एक सीख ठोंक दी जाए और खींच ली जाए। कहतें हैं कि एक क़ब्र पर ईसा(अ०) का गुज़र हुआ देखा कि कब्र में कठोर कष्ट हो रहा है। ईसा(अ०) ने दुआ़ की खुदावन्दा इस बन्दा को ज़िन्दा कर दें। अल्लाह ताआ़ला ने बन्दा को ज़िन्दा कर दिया ईसा(अ०) ने पूछा तुमहें क़ब्र में कष्ट किस कारण से हुआ? कहा कि एक दिन कोई चीज़ हमने खाई थी ख़लाल की आवश्यकता हुई एक व्यक्ति के गठ्ठे से एक तिनका लेकर हमने ख़लाल किया और चार हज़ार वर्ष हो चुके हैं मेरे मरे हुए और मैं इस कष्ट को भोग रहा हूँ। जनाब ईसा(अ०) ने फ़रमाया कि ये कठोर कष्ट सिर्फ एक ख़लाल के कारण से है। उनलोगों को कैसा कष्ट होगा जो लोगों के तीन और खंभों को ज़ुल्म से ले लेते हैं। फिर पूछा कि मौत को कैसा पाया और जानकनी की सख़्ती कैसी थी? कहा कि हमको मरे हुए चार हज़ार साल हो चुके हैं लेकिन मेरे कंठ से मौत की तल्ख़ी अभी तक नहीं गई है। जनाब ईसा(अ०स०) ने दुआ़ की ख़ुदावन्दा मौत की तल्ख़ी को आसान कर दें।

काब अहबार ने पूछा कि मौत कैसी चीज़ है? उत्तर दिया कि उसका उदाहरण यूँ समझो कि एक काँटादार पेड़ है। उसे किसी मनुष्य के पेट में डाला जाए और प्रत्येक काँटा अन्दर चुभ जाए। फिर एक ताकतवर मनुष्य उसे खींच कर बाहर निकाले। उसमें से जो

निकल सके निकल सके और जो काँटा अपने स्थान रह जाए वह चुभन पैदा करता रहे।

ईसा(*अ०स०व०*) एक दिन अपनी माता हज़रत मरियम की क़ब्र के पास खड़े हुए और कहा कि "ऐ माँ मौत को कैसा पाया?" और इसकी तल्ख़ी को बताईए? कहा कि ऐ मेरे पुत्र मौत की तल्ख़ी अभी तक नहीं गई है। वहीं से हज़रत ईसा(*अ०स०व०*) लौट आए और अपनी यात्रा में व्यस्त हो गए।

(7) क़ब्र की कैफ़ियत और मुनकिर नकीर के सवाल के बयान में

नक़ल है कि क़ब्र अपने अन्दर आने वाले को चार चीज़ों की निदा करती है। वह कहती है कि (*मालदार*) धनी अपने धन से क़ब्र की गुरबत के लिए सामान तैयार कर और अपनी रौशनियों से कब्र के अंधकार का प्रबंध कर और अपने हमदम और मित्र से कब्र की तनहाई का सामान और अपनी विशाल स्थिति से क़ब्र की संकीर्णता के लिए यात्रि (*तोशा*) भेज।

जब मुर्दा को क़ब्र में रख देते हैं तो उससे पूछा जाता है कि दुनिया से ये चार वस्तुएँ लाए हो ?

कहते है कि अमीरूल मोमनिन उसमान(*रज़ि०*) जब नरक की चर्चा सुनते तो न रोते और जब क़्यामत कि चर्चा सुनते तो न रोते,

लेकिन जब क़ब्र की चर्चा सुनते तो बहुत रोने लगते। लोगों ने पूछा कि "ऐ अमीरूल मोमेनीन ये क्या हाल है?" कहा कि अगर नरक में रहुँगा तो लोगों के साथ रहुँगा और अगर क्यामत में रहुँगा तो लोगों के साथ होऊँगा, लेकिन क़ब्र में बिल्कुल अकेलापन होगा न वहाँ कोई साथी होगा और न दुःख का बाटँने वाला।

हदीस शरीफ़ में है कि जब कोई व्यक्ति मुसलमानों के कब्रिस्तान से गुजरता है तो कब्र वाले असससे कहते है कि ऐ गफ़लत में रहने वाले, जो मैं जानता हूँ अगर तू जान ले तो तेरे शरीर के मांस छूट कर गिर जाएँ। जैसे सिख के मांस आग पर रखने से।

हज़रत अब्बास(*रज़ि०*) से रेवायत है कि जब ईद का दिन या शुक्रवार का दिन या आ़शुरा (*मुहर्रम कि दसवीं तारीख़*) या शबे बरात आती है तो मुर्दों की आत्मा क़ब्र से निकलकर अपने घरों के दरवाज़े पर आती है और खड़ी होकर पुकारती है कोई है कि मुझे याद करे, मेरे लिए कृपा और दया की प्रांथना करे। और कोई है कि मेरे इस अकेलेपन को याद करे फिर वह कहती हैं कि ऐ वह लोगों जो मेरे घरों को अपना निवास स्थान बनाए हुए हो और मेरी पत्नियों से निकाह किए हुए हो मेरे यतीम बच्चों को हीन और अपमानित करके छोड़ा है। मेरे अकेलेपन को याद करो मेरी चर्चा समाप्त हो चुकी, तुमहारे नामों की प्रसिद्धि और चर्चा है।

हदीस शरीफ़ में है कि क़ब्र मुर्दों के लिए स्वर्ग की फुलवारियों

में से एक फुलवारी बन जाती है या नरक की खाई में से एक खाई हो जाती है। और कुछ लोगों को क़ब्र अपने बाहुपाश में लेती है जिस प्रकार ममता मयी माँ अपने पुत्र को लेती है। लेकिन कुछ लोगों को इस प्रकार कि उसके पहलु की हड्डियाँ एक दूसरे से मिल जाती हैं।

कथन है कि एक महापुरूष ने सपना में देखा कि वह एक क़ब्रिस्तान में हैं और उन लोगों के बीच आए हुए हैं, देखा कि ज़मीन खुली तो देखते हैं कि कोई फूलों की सेज पर सोए हैं और कोई रेशमी बिस्तर पर आराम कर रहे हैं। अ़र्ज़ की कि खुदा वन्दा अगर सब बन्दे बुज़ुर्गी और बड़ाई में बराबर होते, ये भी हो सकता था, एक आवाज़ आई कि ऐ फलां इब्ने फलां ये अपने कर्त्तव्य का श्रेय है जिसने पूण्य कार्य किया उसने उत्तम और सुन्दर बिस्तर पाया। पैग़म्बर(स०अ०व०) से एक व्यक्ति ने पूछा कि बड़ा पारसा कौन है? कहा कि जो क़ब्र को न भूले और संसार की इच्छाओं को त्याग दे और भविष्य के लिए अपने इन्हीं इच्छाओं की चिन्ता करे। एक महापुरूष का कथन है कि जो व्यक्ति नसीहत प्राप्त करना चाहता है वह क़ब्रिस्तान जाए और सोचे कि इसमें कैसे कैसे व्यक्ति सोए हुए हैं। एक बुद्धिजीवी का कथन है कि अगर मोमिन को कोई कष्ट न होता केवल यह कि इस को क़ब्र में रखा जाए और जो गृए-क़ब्र वह बर्ताव उसके साथ हो कि दबाने से उसके शरीर के सारे अंग कण-कण हो जाएँ और पहलू की हड्डियाँ आँटा की तरह पिस

जाएँ तो केवल यही कष्ट अत्यधिक था। फिर इसको क्या किया जाए कि इसके बाद भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट और नरक की आग का खतरा सामने हैं। हदीस शरीफ़ में है कि मुर्दा अपने पीछे तीन चीजें छोड़ता है। दो रह जाती हैं और एक उसके साथ जाती है। कहते है कि क़ब्र रोज़ाना सात बार विलाप करती है और कहती है कि मैं तन्हाई का घर हूँ, तिलावत-ए-क़ुरआन को अपना मित्र बना, मैं अंधेरी कोठरी हूँ रात की नमाज़ से मुझको प्रकाशित कर, मैं मिट्टी का घर हूँ पूण्य और सत्य कर्म का बिस्तर लगा। और मैं साँप और बिच्छु का घर हूँ। सोने का टुकड़ा सदका कर और मैं संकीर्णता का घर हूँ मेरी विस्तार के लिए पूण्य कर्म का सामान तैयार कर और मैं मुनकीर नकीर के प्रश्नों का स्थान हूँ इसलिए आज मेरी पीठ पर (*लाइला-ह-इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसुलुल्लाह*) का ज़िक्र अत्याधिक यानि अपने को इसका आ़दी कर ले। नक़ल है कि जैसे ही मुर्दे को क़ब्र में दफ़न करते हैं, दो फरिशते जिनका नाम मुनकिर नकीर है, वह अपनी पूरी भयानकता के साथ क़ब्र में प्रवेश करते हैं और मुर्दा को बैठाते हैं और पूछते हैं तेरा ख़ुदा कौन है? अगर मुर्दा मोमिन है तो कहता है कि मेरा ख़ुदा अल्लाह है। फिर सवाल करते है कि तेरे पैग़मबर कौन हैं? तो वह उत्तर देता है कि मेरे पैग़म्बर मोहम्मद(*स०अ०व०*) हैं। फिर पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह कहता है कि मेरा दीन इस्लाम है। असके बाद क़ब्र में एक दरवाज़ा

खोल दिया जाता है और कहा जाता है कि निवास स्थान देख ले। फिर कहा जाता है कि हाव-भाव के साथ रह ऐसे जैसे दुलहन सोती है। इसके विपरीत मुर्दा काफ़िर होता है। क़ब्र मे उसको बैठाया जाता है। मुनकीर-नकीर उससे सवाल करते हैं। तेरा ख़ुदा कौन है? वह कहता है कि मैं कुछ नहीं जानता नतीजा में आग के फौड़ों से ऐसे ऐसे मारते हैं कि सारी दुनिया सुनती है। केवल आदमी नहीं सुनता है। फ़िर कहा जाता है कि सो रह जैसे कि बोहोश सोता है। (*बोहोश उस को कहते हैं जो साँप और बिच्छु के बीच हो*)।

नक़ल है कि उम्मुल मोमेनीन हज़रत आ़यशा सिद्दिक़ा(*रज़ि०*) ने कहा कि या रसूल अल्लाह, जिस दिन से हुज़ूर ने मुनकीर-नकीर की भीषणता की सूचना दी है। और क़ब्र के दबोचने के बारे में फ़रमाया है। उसके बाद से कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती है। पैग़मबर(*स०अ०व०*) ने कहा है कि ऐ आयशा मोमिनों के कान में मुनकीर नकीर की आवाज़ ऐसे मालूम होगी जैसे पुत्र अपनी माँ से कहे ऐ मेरी माँ मेरे सर में दर्द है। फिर उसकी माँ धीरे-धीरे दबाए। लेकिन ऐ आयशा काफ़िर क़ब्र में ऐसे चूर होगा जैसे अण्डा बड़े भाड़ी पत्थर के नीचे। पैग़मबर(*स०अ०व०*) ने हज़रत उमर ख़त्ताब(*रज़ि०*) से पुछा कि ऐ उमर मुनकीर-नकीर के साथ कैसा मामला होगा? अ़र्ज़ किया या रसूल अल्लाह मुनकीर-नकीर क्या है? फ़रमाया कि दो फ़रिशते हैं जो क़ब्र की मुसीबत कहलाते हैं। वह क़ब्र में इस

भयानक शक्ल में आते हैं कि उनके बाल ज़मीन पर घिसटते रहते हैं और उनके दाँतों से आग के शोले निकलते हैं। आँख उनकी बिजली गिराती हुई, आवाज़ उनकी बिजलियों की कठोर कड़क की भांती, पैर उनके आग के पत्थर वाले खंभे की भांति, अगर प्रलय के मैदान के सभी पुरूष उसे अपने स्थान से हिलाना चाहें तो हिला न सकें, तो बन्दा से वह सवाल करेगें कि तेरा ख़ुदा कौन है? अगर मुसलमान होगा तो कहेगा मेरा ख़ुदा अल्लाह है। फिर पूछेंगे तेरा दीन क्या है? वह कहेगा मेरा दीन इसलाम है, फिर कहेंगे तेरे पैग़म्बर कौन हैं? वह जवाब देगा मेरे पैग़म्बर मोहम्मद(*स०अ०व०*) हैं। उसके बाद कहेंगे तुमने सच कहा, इसके विपरीत मुर्दा काफ़िर होगा और उससे सवाल करेंगे तेरे ख़ुदा कौन है? वह कहेगा मैं नहीं जानता, तो एक बार ऐसा वार मारेंगें कि अगर पहाड़ हो तो कण कण हो जाए और उसकी दुहाई ऐसी होगी कि केवल आदमी और जिन के सिवा सभी जीव सुनेंगे और जो सुनेगा वह धिक्कार करेगा। हज़रत उमर(*रज़ि०*) ने कहा या रसूल अल्लाह, मैं मुनकीर-नकीर को किस हाल में देखुँगा। फर्माया कि इसी हाल में जिस हाल में आज इस समय हैं। यानि होश-व-हवास के साथ, फिर हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा क्या मालूम जवाब दे सकुँगा भी या नहीं। हज़रत उमर ख़ताब के मरणोपरान्त उनके मित्रों में से एक ने उनको सपने में देखा और पूछा कि ऐ उमर मुनकीर-नकीर के साथ आपका क्या हाल हुआ? कहा

कि जिस समय मुझको क़ब्र में रखा गया, पूरी भयानकता के साथ दोनों पहुँचे और दूर खड़े रहे, प्रश्न किया कि आप का ख़ुदा कौन है? एक भय और आश्चर्य हम पर प्रकट हुआ अगर अल्लाह की कृपा, दया और उसकी सहायता शामिल न होती तो मुझसे जवाब न चलता।

(8)इस बात के भय में कि न जानें दुनिया से मुसलमान जाऊँगा या काफ़िर के बयान में

गम खाना इसलिए कि दुनिया से मुसलमान जाना फ़र्ज है, जब बन्दा कुफ़्र और पाप से दूर होता है और इमान की कमी से हमेशा भयभीत रहता है तो मरने के समय दो फ़रिश्ते उसको शुभ संदेश देते हैं। एक वह हैं जो ये कहते हैं कि अपने ईमान के समाप्त होने से मत डर, यक़ीनन अल्लाह तआला तुझे क्षमा कर देगा और अपनी कृपा एवं दया से मुक्ति देगा। बन्दा इन दोनों शुभ संदेशों से प्रसन्न हो जाता है, एक महापुरूष का कथन है कि मोमिन को प्रलय के दिन सत्तर भयानकतायें सामने आएँगी। प्रत्येक भयानकता ऐसी होगी कि पिछली भयानकता को भूल जाएगा। मौत की घड़ी जब निकट होगी तो उसके कान में दो खुश ख़बरियाँ सुनाई देगीं कि खौफ़ न कर और ग़म न खा। तू सभी प्रकार के भय से निश्चिंत है। और उन सभी परिस्थितियों से जिसका तुझे भय था जब यह दो खुश ख़बरियाँ आएँगी और वह भय सामने आएगा तो वह कहेगा कि अब मुझे कोई डर नहीं है क्योंकि मुझे शुभ संदेश दिया जा चुका है कि तू मामुन(*सुरक्षित*) है। हजरत ख़्वाजा हसन बसरी(रह०) ने

नबी-करीम(*स०अ०*) से रवायत की हैं कि हुज़ूर ने फरमाया अल्लाह ताआला अपने मान-मर्यादा की कसम खाकर कहता हैं अपने बन्दा पर दो भय को जमा नहीं करूँगा और न अपने बन्दा पर दो अमन को जमा करूँगा। जो बन्दा दुनिया में मुझसे डरता रहा उसको प्रलय के दिन वे बेखौफ़ कर दूँगा। जो संसार में मुझसे भयभीत नहीं रहा उसको प्रलय के दिन निंदित करूँगा। तो जो आज भयभीत है कल महाप्रलय में भय-मुक्त कर देगा। और जो भयमुक्त है वह महाप्रलय के दिन भयभीत रहेगा। हसन बसरी(*रह०*) से रवायत हैं कि क़ौम बनी इसरायल में सत्तर पारसा थे। उस काल में अराधना और परहेजगारी में उनके जैसा कोई दूसरा न था। उस काल में पैगम्बर *अलैहिस्सलाम* पर *वही* आई कि ये सत्तर पारसा सब के सब इस संसार से काफ़िर गए। पैगम्बर-इसलाम ने अल्लाह तआला से प्रार्थना की खुदा बन्दा ऐसा क्यों? आदेश हुआ कि ये लोग अपने कर्म के परिणाम से भयमुक्त व निडर हो गए थे। हदीस शरीफ में है कि जो व्यक्ति अपने कर्म के परिणाम से नहीं डरता कि परलोक में क्या होगा? वह मुझसे नहीं (*यानि मेरा प्रेमी नहीं*) नक़ल है कि जब बन्दा के निधन का समय निकट होता है तो उसकी दशा पाँच स्थितियों में बदल जाती है। धन पर उत्तराधिकारी का अधिकार है, प्राण यमराज की, माँस कीड़े मकोड़े का, हड्डियाँ मिट्टी की। पूजा-अर्चना व सारा पूण्य कर्म दावेदार ले लेगें। कहीं ऐसा न हो कि ईमान शैतान ले जाए। नक़ल है कि सुलेमान दारानी(*रह०*) जब किसी आतिश-प्रस्त को देखते बेहोश हो जाते। पूछा गया कि ऐ महापूरूष ये क्या हाल है? कहा अल्लाह तआला से डरता हूँ कि मेरा हाल उस जैसा

न कर दे और मैं उस जैसा न हो जाऊँ। ख़्वाजा सुफ़ियान सूरी(रह०) सारी रात रोते रहते। शान रागी ने कहा, ऐ, सुफ़ियान, क्यूँ रोते हो? फ़रमाया कि एक ऐसे व्यक्ति को हमने देखा है कि लोग चालीस वर्ष से ज्ञान प्राप्त करते रहे और वर्षो-वर्ष उसने खानाए काबा की मुजाबिरी की लेकिन जब दुनिया से गया तो काफिर गया। उसका हाल ऐसा हो गया, मैं नहीं जानता कि मेरा हाल क्या होगा, मेरे रोने का यही कारण है। ख़्वाजा मआ़ज़ नफ़ती(रह०) अल्लाह तआला से लगातार प्रार्थना करते कि मेरे मरने से तीन दिन पूर्व मेरी बुद्धि को उठा ले, लोगों ने कहा कि ऐ, महापुरूष ये कैसी प्रार्थना है, कहा, मृत्यु के भय से, अगर निधन के समय कोई ऐसी बात जबान से निकल जाए जिस पर पकड़ हो तो मुझको दीवानों में गिनती किया जाए। दीवानगी की वजह कर लाचारों में हुँ। ख़्वाजा अबुब्कर(रह०) को मरने के बाद लोगों ने सपने में देखा और पूछा ऐ, महापुरूष आपका क्या हाल है? कहा कि बहुत दुःखी हूँ। पूछा कि क्यूँ? कहा हर दस जनाजे जो क़ब्रिस्तान में लौट जाते है उनमें केवल एक ईमान वाला होता है। एक कफ़न चोर ने ख्वाजा हातिम(रह०) की मजलिस में तौबा की। ख़्वाजा ने पूछा कि कितनी क़ब्रों से तूने कफ़न चुराए हैं। उसने उत्तर दिया सात हज़ार क़ब्रों से। बीस साल की मुद्दत में। ख़्वाजा हातिम(रह०) बेहोश हो गए कुछ देर बाद होश में आए और पूछा कि ये सात हजार क़ब्र वाले मुसलमान थे या काफ़िर? कहा कि सब मुसलमान थे। ख़्वाजा ने पूछा कि मुझे बता कितने लोगों को तूने पाया कि जिनका चेहरा काबा की ओर से फिरा हुआ था? उसने कहा ये न पूछिये, बल्कि ये पूछिये कि कितनों का चेहरा काबा की

ओर था। फिर कहा कि इन सात हजार क़ब्रों में सिर्फ तीन सौ व्यक्तियों का चेहरा काबा की ओर था। बाक़ी सभी का काबा की ओर से फिरा हुआ। हज़रत फिर बेहोश हो गए। जब होश में आए तो कहा, यही नसीहत मेरे लिए बहुत है। ख़्वाजा फ़ुज़ैल अय्याज़ (रह०) ने ख़्वाजा दाऊद ताई (रह०) को देखा कि सूख कर काँटा हो गए हैं। पूछा कि आपका ये विलाप क्यूँ है? कहा कि आठ चीजें ऐसी है कि जिसमें मुझसे खाना-पीना छुड़ा दिया है। पूछा कि वह आठ चीजें क्या है? फ़रमाया कि प्रथम इस बात का भय कि अन्त इस्लाम पर होगा या कुफ़्र पर, और मेरी ठुड्डी इस्लाम पर बन्द होगी या कुफ़्र पर, दूसरे जब मुझे क़ब्र में रखेंगें तो मेरी क़ब्र स्वर्ग के बागों में से एक बाग होगा या नरक की खाई में से एक खाई, तीसरे जब मुनकीर-नकीर मुझसे सवाल करेंगे तो सही जवाब दे सकूँगा या नहीं, चौथे जब क़ब्र से बाहर आऊँगा तो मेरा चेहार उजला होगा या काला। पाँचवी जब क़ब्र से बाहर आऊँगा तो बुराक़ पर बैठकर स्वर्ग की ओर ले जाएँगे या नरक की ओर हाँक देगें। छठे क़्यामत में जब नामा-ए-आमाल निकाले जाएँगे तो वह नामा दाहिने हाथ में मिलेगा या बाएँ हाथ में। सातवीं जब मेरा हिसाब करने लेगेंगे तो हिसाब दे सकूँगा या नहीं। आठवीं क़्यामत के दिन दो रास्ते होगें एक स्वर्ग का रास्ता दूसरा नरक का। मुझे स्वर्ग के रास्ते में ले जाएँगे या नरक के रास्ते मे हाँक देंगे।

(9) बिहिशत से महरूमी और दाख़िला दौज़ख़ के बयान में

पैग़म्बर(स०) का आदेश है कि जिस व्यक्ति को इस बात का भय न हो कि दुनिया से वह मुसलमान जाएगा या काफिर और मुनकीर-नकीर के सवाल का ग़म न हो उसके बावजूद कल के कर्मों की उसे चिन्ता होती है और इस बात की चिन्ता नहीं होती है कि इन सब के बाद कल जो महाप्रलय का दिन है उस दिन उसे स्वर्ग में ले जाएँगे या नरक में डाल देंगे तो ऐसे लोग मेरे रास्ते और तरीक़े पर नहीं हैं।

हज़रत अबु हुरैरा(रज़ि०) मौत के समय फूट-फूट कर रोते थे। लोगों ने पूछा कि ऐ हज़रत सय्यदा की संतान आप क्यों रोते हैं? कहा कि मैं ऐसे मार्ग पर जा रहा हूँ कि इससे पूर्व इससे नहीं गुज़रा। मालूम नहीं कि मुझे पैग़म्बरों और शहीदों के साये में रखेंगे या काफ़िरों और शैतानों के साथ नरक में, तो कैसे न रोऊँ। कहते हैं कि खलीफ़ा हारून रशीद ने हज़रत इब्न समाक(रह०) से कहा कि मुझे वसीयत फ़रमाएँ। फ़रमाया कि ऐ, खलीफा मार्ग और स्थान दो ही हैं स्वर्ग या नरक। मालूम नहीं कि स्वर्ग में ले जाएँगे या नरक में झोंक देंगे। हारून रशीद मुर्छित हो गए, मौत के निकट हो गया लोग उसके चारो ओर इक्ट्ठा हो गए। इब्न समाक ने कहा। इन्हें छोड़ दो, मरने दो। जब हारून रशीद को होश हुआ तो उन्होंने पूछा कि आपने ऐसा क्यों कहा कि छोड़ दो, मरने दो? जवाब मिला कि तुझे गर्व हो, लोग कहें कि ख़लीफ़ा अल्लाह तआला और नरक के भय में मरा।

रवायत है कि साबित विनाई(रह०) ने एक महिला को कहा

कि मैं चाहता हूँ कि तेरी चाह पैदा करूँ, महिला ने कहा कि ऐ, साबित आपको मौत की चिन्ता नहीं हैं। इस संसार से मुसलमान जाएगा या काफिर, और मुनकीर-नकीर और पुलसरात की चिन्ता नहीं है। मार्ग दो ही है, स्वर्ग या नरक मार्ग, क्या खबर कि आपको स्वर्ग में ले जाएँगे या नरक के मार्ग पर डाल देंगे। ख़्वाजा साबित रोने लगे और क्षमा-याचना की। एक बादशाह ने एक महापुरूष से कहा कि मुझे वसीयत कीजिए, कहा कि स्वर्ग सदाचारियों के लिए आरक्षित है, जहाँ तक हो सके नेकी कर और नरक विशेष रूप से दुराचारियों के लिए है। जहाँ तक संभव हो बुराईयों से दूर रह। अमीरूल मोमेनिन हज़रत अ़ली(*रज़ी०अ़०*) का कथन है कि स्वर्ग अनुयायी और सदाचारियों के लिए है। गरचे वह हब्शी गुलाम ही हो। और नरक पापियों के लिए है। गरचे वह बादशाह कुरैश ही हो। बुद्धिजीवियों का कथन है कि स्वर्ग से वंचित रहना एक विपत्ति है। और मालूम नहीं कौन विपत्ति बड़ी है। स्वर्ग से वंचित रहना या नरक में प्रवेश करना। कथन है कि संसार व्यस्तता का निवास है, विभिन्न स्थितियों से गुजरना है। यहाँ तक कि स्वर्ग उसका निवास स्थान बने या नरक। ख़्वाजा इब्राहिम अदहम ने जिस दिन बादशाही का त्याग किया और संयास लिया और यात्रा प्रारंभ किया। एक पुत्र ने जन्म लिया, जब जवान हुए हज को गए। ख़्वाजा इब्राहिम ने उनको देखा, पहचाना। बगलगीर हुए और विलाप किया। थोड़ी देर के उपरान्त कहा कि ऐ, बेटे लौट जाओ और अपनी माता को मेरा सलाम कहो। पुत्र ने कहा कि बाबाजान, जब से होश संभाला है आपकी खोज में हूँ ताकि आपकी सेवा करूँ, आज हुजूर को पाया है कैसे छोड़ दूँ।

हज़रत ने फ़रमाया तुम मेरी संगति में धैर्य न रख पाओगे, मैं एक यात्री हूँ, जाओ अपनी माँ के पास चले जाओ, इंशा अल्लाह कल महाप्रलय के दिन भेंट होगी। पुत्र ने कहा कि बाबाजान, प्रलय के दिन भीड़-भाड़ (*जमघट*) होगा। हुजूर को मैं कहाँ खोजूँगा? कहा पुलसरात के निकट। कहा कि अगर वहाँ न पाऊँ तो कहाँ दुढूँ? कहा तराजू के निकट, कहा कि ऐ हुज़ूर तराज़ू के दोनों पल्लों के बीच पाँच सौ वर्ष का मार्ग है किस पल्ला के निकट हुजूर को देखूँ? कहा कि बुराई और पापों के पल्ले के पास। कहा कि अगर वहाँ न पाऊँ तो कहाँ ढुढूँ? फ़रमाया कि महशर में अदालत की कुर्सी के पास। कहा कि बाबाजान, वहाँ दो पंक्तियाँ होगी एक पंक्ति सदाचारों की और दूसरी पंक्ति दुराचारों की। आपको किस पंक्ति मे तलाश करूँ? फ़रमाया कि दुराचारों की पंक्ति में। पूछा! ए पिता श्री अगर वहाँ भी न पाऊँ तो कहाँ ढंढूं? कहा ''नरक के द्वार पर'', कहा यदि वहाँ न पाऊँ तो कहाँ देखूँ? बताया गया नरक के दारोगा से पूछना कि इब्राहीम गुनाहगार को किस नरक में डाला है। निवेदन किया गया कि यदि श्रीमान वहाँ भी न मिले तो कहाँ खोजूँ? बोले अब स्वर्ग में देखना कारण कि राह दो ही हैं- स्वर्ग या नरक। जब नरक में न मिलूँ तो स्वर्ग ही में अल्लाह ने चाहा तो रहूँगा। एक संत ने अपने एक मित्र को लिखा ए भाई काम अत्याधिक कठिन है, और सामने राह बड़ी लम्बी है असावधान न रहो। तुम्हें नहीं पता कि संसार से साथ ईमान के जाना होगा या साथ कुफ़्र के। प्रिय बनके जाओगे या कपटी। साथ सुन्नत के जाओगे या साथ बिदत भक्ति साथ जायेगी या पाप, अन्त सदाचारियों और संयमियों के धर्म पर होगा या

दुराचारियों (फ़ासिकों) और कुक्रर्मियो के धर्म पर और उसके पश्चात भी तुम नहीं जानते हो कि अल्लाह तआ़ाला को अपने ऊपर प्रसन्न पाओगे या क्रोधित और कठोर? और यह भी नहीं जानते कि तुम्हारा हाल क़बर में मुनकिर-नकीर के समक्ष क्या होगा? उनके प्रश्नों के उत्तर क्योंकर दे सकोगे? हम और तुम यह भी नहीं जानते कि पैग़म्बरों, सत्यवादियों और सदाचारियों के साथ स्वर्ग में रखे जायेंगे या काफ़िरों, शैतानों और कपटियों के साथ नरक में डाल दिये जायेंगे। एक संत रात व़ दिन रोया करते लोगों ने पूछा इस प्रकार क्यों रोया करते हैं? बोले कआ़ब अहबार से यह ख़बर पहुँची है कि कोई ऐसा दिन नहीं होता कि (प्रत्येक दिन) क़बर पाँच बार पुकारती है कि ऐ आदम की संतान तू मेरी पीट पर पाप करते हैं मेरे पेट में अज़ाब (कष्ट) झेलेगी। अफसोस आदम की संतान मेरी पीठ पर हंसी के दिन गुज़ारती है और मेरे पेट में रोयेगी। ऐ आदम के पुत्रों! अल्लाह की नेयमतें (धन-वैभव) मेरी पीठ पर बैठ कर खाते हो, मेरे पेट में कीड़े तुम्हें खायेंगे।

(10) क़ियामत और उसकी सख़्तियों के बयान में

प्रलय, हिसाब का दिन है, कण-कण का हिसाब होगा। हदीस शरीफ़ में है कि स्वर्ग हाव-भाव एवं सुख सामग्री के साथ पूण्य कर्मियों के लिए हमेशा तैयार है, दुष्कर्मियों के लिए नरक की यातनायें और मुसीबत हमेशा तैयार है। उस दिन के भय से सभी पर्वत जो इस प्रकार दृढ़ता के साथ स्थापित है उड़ते हुए रेत-और बालू की तरह हो जाएँगे। हदीस शरीफ़ में है पैग़म्बरान(स़०) उस

दिन के भय में कपकपी और थरथरी में आ जाएँगे और सब के सब नफ़सी-नफ़सी (*त्राहि-त्राहि*) कहने लगेंगे। लेकिन हमारे पैग़म्बर(*स०*) उम्मती-उम्मती कहेंगे। रवायत है कि उस दिन के भय से लड़कों के सर के बाल उजले हो जाएँगे, संतान अपने माता-पिता से, पति अपनी पत्नियों से भागने लेंगगे। आसमान फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। कहते हैं कि प्रलय का भय इस सीमा तक पहुँचेगा कि इब्राहिम ख़लीलुल्लाह और हजरत मोहम्मद(*स०*) अपने माँ-बाप से अलग रहेगें। लूत(*अ०स०*) अपनी पत्नियों से भागेंगे और दूसरे पैग़म्बर स्वंय अपने लड़के से अलगाव पसंद करेगें। सभी सितारे जो आतिशी हैं वह दरिया की ओर लपकेंगे। दरिया का पानी आग की भांति हो जाएगा। संसार के सारे प्राणियों में से कोई व्यक्ति एक बूँद भी न पाएगा कि पी सके। जब इसराफ़ील पहली बार **सूर** फूकेंगे तो तमाम प्राणी वर्ग मुर्दा हो जाएँगे, कुछ देर बाद दूसरा सूर फुकेंगे तो तमाम प्राणि वर्ग जीवित हो जाएँगे। सूर करना की भांति है कि उसके सर की गोलाई आसमान और जमीन के बीच दूरी के समान है। हदीस शरीफ़ में है कि प्राणी जब क़ब्र से उठेगा तो हर व्यक्ति कब्र पर तीस सौ साल तक भूखा-प्यासा खड़ा रहेगा किसी को मजाल न होगी कि जुबान भी हिला सके। एक दिन उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा(*रजि०*) ने कहा कि या रसूल अल्लाह(*स०*) उस दिन औरतों की कैसी दुर्गति होगी। पैग़म्बर(*स०*) ने फरमाया कि ऐ आयशा महाप्रलय के दिन का भय ऐसा होगा कि किसी को ये खबर न रहेगी कि नंगा हूँ या कपड़े में हूँ? और कोई ये न जानेगा कि कौन मर्द है और कौन औरत? नक़ल है कि जब सातों आसमान और ध

रती के प्राणी को यानि फरिश्ते, देव-परियाँ. जानवर और पक्षी सब के सब को ज़िन्दा करने के बाद नंगे पाँव भूखे प्यासे हश्र के मैदान में हाँक देंगे। महशर की जमीन समतल और उजली है। इसमें कोई ऊँच-नीच नहीं है कि कोई व्यक्ति छुप जाए। उस समय सूर्योदय होगा, चौथे आसमान से पश्चिम की दिशा से निकलेगा। कल महाप्रलय के दिन यही सूर्य सभी प्राणियों के सरों पर एक नेज़ा की दूरी तक आ जाएगा। प्रलय स्थल पर कोई साया न होगा, मगर अल्लाह तआला के अर्श का साया रहेगा और उस साया को केवल निकटतम भक्त और उसके मुख्य भक्तों के और कोई न पाएगा। सूरज की गर्मी यहाँ तक होगी कि लोग अपने पसीना में डुब जाएँगे। कोई पिण्डलियों तक कोई जाँध या कमर तक और कोई सम्पूर्ण डूब जाएगा। फिर आदेश होगा कि **पुलसरात** तक ले चलें। पुलसरात हिसाब का स्थल है। सब को उस ओर ले ज़ाया जाएगा। ताकि उनलोगों से हिसाब लिया जा सके। पुलसरात एक ऐसा पुल है कि जिसको नरक के मुँह पर स्थापित किया है और वह तलवार की धार से भी ज्यादा तेज और बाल से भी अधिक बारीक है। उस पर से कोई वायु की भांति गुजर जाएगा। और कोई फुर्तीले घोड़े की भांति, कोई दुलकी चाल की तरह गुजेंरगा और कोई बैठकर खिसक-खिसक कर छोटे-बच्चों की भांति चलेगा और कोई ऐसा होगा कि गुजर ही न सकेगा और उस पर से नरक में गिर पड़ेगा। अल्लाह तआ़ला अपनी पनाह में रखे। महाप्रलय के दिन ऐसा होगा कि हर व्यक्ति के कर्म की सूचि उड़ कर उसके हाथ में आएगा और प्रत्येक व्यक्ति पर प्रकट हो

जाएगा, प्रत्येक व्यक्ति को कर्म की सूचि दिया जाएगा, मोमिन को यह सूचि दाहिने हाथ में मिलेगा। और काफ़िरों को ,बाएँ हाथ में और कहा जाएगा कि अपने-अपने कर्म सूचि को पढ़े। किसी मोमिन को कर्म सूचि बाएँ हाथ में नहीं मिलेगी। और न पीठ की ओर से देंगे चाहे वह पापी और काफ़िर ही क्यूँ न हो। इस प्रकार के महाप्रलय के दिन किसी को मोमिन का मुख काला न होगा। चाहे वह पापी ही क्यों न हो। काफ़िर का चेहरा काला होगा और उसका कर्म सूचि उसके बाएँ हाथ में पीठ की ओर से देंगे। और वह ऐसा होगा कि काफ़िर न देखेगा, जो व्यक्ति यह कर्म सूचि दाएँ हाथ में पाएगा वह मुक्ति पाएगा। जो व्यक्ति बाएँ हाथ में यह कर्म सूचि पाएगा वह हलाक होगा। इसी तौर पर काफ़िर अपना दायाँ हाथ कर्म सूचि लेने के लिए बढ़ाएँगे और बायाँ हाथ पीठ की तरफ कर लेगें वह यह सोचेंगे कि मुक्ति इसी में है। फ़रिश्ता उसके दायाँ हाथ को उठा के छाती पर दे मारेगा तो बायाँ हाथ पीठ की ओर बढ़ा देगे। उस समय वह फरिश्ता उनकी गरदनों को मरोड़ कर उनके चेहरों को पीठ की ओर कर देगा। फिर उसका कर्म सूचि उसके बाएँ हाथ में उसकी पीठ की ओर से देंगे। जब मोमिन अपने कर्म सूचि को पढ़ेंगे तो सम्पूर्ण कर्म सूचि पूजा-अर्चना, आज्ञापालन से परिपूर्ण देखेंगे। इसी प्रसन्नता में अपने मित्रों से कहेंगे कि इस कर्म सूचि को पढ़ने में मुझे प्रसन्नता हुई है और जब काफ़िर अपने कर्म-सूचि को पढ़ेगा तो अफ़सोस

करेगा और फ़रियाद करेगा। उस समय नरक के द्वार पर नियुक्त फ़रिश्ते उसको आदेश देंगे कि पकड़ो अग्नि ज़ंजीरों से, फ़रिश्ते सत्तर रस्सियाँ जो ज़ंजीरों की हैं उसमें बांध देंगे। हज़रत इब्न अ़ब्बास(रज़ि०) ने फ़रमाया है कि ज़ंजीर उसके मुँह में प्रवेश करेंगे और उसकी पीठ की ओर से बाहर निकालेंगे। फिर उसी जंजीर के निकले हुए शेष भाग को गरदन में लपेट देंगे।

नक़ल है कि कोई व्यक्ति प्रलय की कठोरता से मुक्ति नहीं पा सकता, जब तक कि दामदिरम, दीनार तथा धन-दौलत जो कि लोगों का अनुचित ले लिया हो या ज़बान या हाथ से किसी को कष्ट दिया हो उसकी पूर्ति न कर दे और दावेदारों को प्रसन्न व सहमत न कर ले। प्रलय का दिन वह दिन है कि मज़लूमीन ज़ालिमों से अपना इंसाफ़ और हक़ पाएँगे। बादशाह और पदाधिकारी वहाँ अपमान और लज्जा महसूस करेंगे। संसार के लोगों के चरणों के नीचे चींटी की भांति मसल दिए जाएँगे। हज़रत अनस(रज़ि०) से रवायत है कि प्रत्येक व्यक्ति को क्यामत के दिन लाएँगे और मिज़ान यानि तराज़ू के दोनों पलड़ों के बीच खड़ा करेंगे और फ़रिश्ता उन पर नियुक्त होगा अगर तराज़ू का पूजा-अर्चना और आज्ञापालन का पलड़ा भारी होगा तो वह फ़रिश्ता ज़ोरदार आवाज़ में पुकारेगा जिसको संसार के सारे प्राणी सुनेंगे। फ़्लां-इब्न-फ़्लां नेक बख़्त और भाग्यशाली हुआ। और हरगिज़ अभागा नहीं और नऊ़ज़ु बिल्लाह मिनहा अगर नेकी

और इबादत का पलड़ा हल्का हुआ और पाप का पलड़ा भारी हुआ तो वह फ़रिश्ता ज़ोरदार आवाज़ में पुकार कर कहेग़ा जिसको सब लोग सुनेंगे फ़्लां-इब्न-फ़्लां बदबख़्त हुआ। इसकी ऐसी बदबख़्ती आई कि जिसे नेकबख़्ती से परिवर्तित नहीं किया जा सकता। और क़्यामत के इन सम्पूर्ण कठिनाईयों एवं कठोरता के साथ प्रत्येक दिन 50 हज़ार वर्ष के समान होगा। पैग़म्बर(स०) से असहाब ने पूछा- या रसूलअल्लाह क्यामत का दिन इस दर्ज़ा कठोर और कठिन है कि इसमें लोगों की क्या दशा होगी? कहा कि कसम है अल्लाह की जिसके कब्ज़े में मोहम्मद(स०) की जान है। मोमिन पर इस दर्जा हल्का और आसान होगा जिस तरह दुनिया में तुम एक समय की नमाज अदा करते हो। इंशाअल्लाह तआ़ला मोमेनीन में से होऊँगा।

(11) दौज़ख़ और उसके अ़ज़ाब के बयान में

नरक को क़ियामत के मैदान में सामने लाया जाएगा और उससे कहा जाएगा कि ऐ नरक! अपने परमात्मा की आज्ञापालन को प्रकट कर उसकी उपस्थिति इस स्थिति में होगी कि वह नरक सत्तर हज़ार तनाबों से बंधा होगा और तुच्छ चिंगारी एक भवन जैसी इतनी दूर तक उठेगी जिसकी दूरी दो सौ साल के मार्ग के समान होगा। उस समय सम्पूर्ण पैग़म्बर अपने-अपने मिम्बरों से उतर आएँगे। सम्पूर्ण प्राणी घुटनों के बल होकर उनके सामने प्रार्थना करेंगे कि मेरी ख़बर

लीजिए, मेरी ख़बर लीजिए। और कुफ़्फ़ार वहाँ इस स्थिति में लाए जाएँगे कि उनकी पेशानी के बाल उनके पाँव में लिपटे होंगे उस समय उन काफ़िरों को गेंदो के समान इकट्ठा किया जाएगा और नरक में डाल दिया जाएगा। भूख नारकीय लोगों पर हावी होंगी। हजार वर्षों तक भूख से तड़पते रहेंगे और याचना करते रहेंगे। उस समय थोहड़ का वृक्ष और उसकी बीज उनको खाने के लिए दिया जाएगा। वह थोहड़ वृक्ष आग के बने होंगे। नरक की गहराई से ऊग कर हर दर्जा तक पहुँचे होंगे। नरक का कोई स्थान ऐसा न होगा जहाँ उस वृक्ष का तना पहुँचा न हो विश्वास करो उसका राक्षसों की तरह बदसूरत होगा और उसका विष सांप के विष की भांति होगा। वह फल मटके की भांति बड़ा होगा और विष से परिपूर्ण होगा उसी वृक्ष से अपना पेट भरेंगे। उस समय प्यास अधिक लगेगी। फिर हज़ार वर्ष तक प्यास से याचना करेंगे उस समय खौलता पानी जिसे हमीम कहते हैं ऐसा कि शरीर पर पड़े तो शरीर के मांस और त्वचा अलग हो जायेंगे वही पानी पीने को दिया जायेगा, लाख वह पीयेंगे तृप्ति न होगी। नक़ल है कि नरक की अग्नि हज़ार वर्ष तक दहकाई और सुलगाई गई है। यहाँ तक कि लाल हो गई फिर दूसरे हज़ार साल तक दहकाई गई यहाँ तक कि काली हो गई। आजकल नरक की अग्नि काली और अंधेरी है। नक़ल है कि दुनिया की आग को रहमत के पानी से सत्तर बार धोया गया है। उस पर यह हाल है कि आदमी उसके निकट नहीं

जा सकता है। नरक की अग्नि में जाने का सबको यक़ीन है और उस से निकलना संदेहास्पद हदीस शरीफ़ में है कि नरक ने अपने परवरदिगार से शिकायत की ऐ मेरे परवरदीगार मेरे कुछ शरीर के अंग ने मेरे कुछ अंगों को खा लिया है। आदेश हुआ कि सांस ले। एक गर्मी के मौसम में और एक सर्दी के मौसम में। अतः ये मौसम गर्मी और मौसम सर्दी नरक की उन्हीं दो सांस से है। हदीस शरीफ़ में है कि नरक का साधारण कष्ट ये होगा कि नारकियों को नरक की अग्नि की खड़ाऊँ पहना दी जाएगी, जिसकी गर्मी और लहर से मस्तिष्क खौलेगा। यक़ीन करो कि नरक का ईंधन दो चीज़ें हैं। एक मनुष्य दूसरा गंधक का पत्थर। जिसमें पाँच विशेषताएं हैं। जो दूसरे पत्थरों में नहीं। ये आग में जल्द सुलग जाता है और देर में ठण्डा होता है और तेज़ दुर्गंध उसमें होती है। गर्मी उसके शरीर में कठोर लेसदार होती है। कोई काफ़िर ऐसा न होगा कि ये गंधकी पत्थर एक पहाड़ की मात्रा में अपने अन्दर न लेले। नरक की अग्नि यही है। इस आग में जाने का सबको यक़ीन है और इससे निकलने में संदेह। नक़ल है कि नरक प्रत्येक दिन कहा करती है कि खुदावन्दा मेरी गर्मी बहुत तीव्र हो गई है और मेरी गहराई बहुत गहरी हो गयी। मेरे बिच्छु बहुत हो गए। आदेश दें ताकि पापियों को दुश्मनी के साथ खीचं लाऊँ और उनको कर्म-दंड तक पहुंचाऊँ। इब्न अब्बास(रज़ि०) फ़रमाते है कि वैल नरक की एक वादी का नाम है वह वादी ऐसी

है कि संसार के संपूर्ण पर्वतों को उसमें डाल दें तो सब के सब पिघल जाएँ। अल्लाह पनाह में रखें। जब काफ़िरों के संबंध में आदेश होगा कि काफ़िरों को नरक में प्रवेश करो तो सभी काफ़िर आपस में कहेंगे कि हम संसार में काफ़िर न थे और क़सम खाने लगेंगे तो अल्लाह तआ़ला विवाद को ख़त्म करने के लिए उनके मुँह पर मुहर डाल देगा। इस प्रकार कि उनकी ज़ुबान फूल जाएगी। इस तरह बात न कर सकेंगे। यहाँ तक कि उनके हाथ और पाँव कुफ़्र की गवाही देंगे। इसके बाद उनकी ज़ुबान वैसी कर दी जाएगी जैसी की थी तो वह अपने शरीर के अंगों से पूछेंगे कि तुमने मुझ पर गवाही क्यों दी। अंग कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने मुझको बोलने का आदेश दिया। अब वह स्वंय ज़ुबान से स्वीकार करेंगे उन वस्तुओं के संबंध में जो उन्होंने किया है। नरक काफ़िरो के लिए बनाया गया है। जिस प्रकार स्वर्ग मोमिनों के लिए। लाख वह गुनाहगार हों एक निर्धारित समय तक नरक में रहेंगे फिर ईमान के सम्मान में नरक से निकाल लिये जाऐंगे। और मोमिन को कष्ट अपमान के लिए न होगा बल्कि उन्हें पवित्र करने के लिए होगा। लेकिन काफ़िर को कष्ट अपमान और रूसवाई के लिए होगा और नरक उसका निवास स्थान होगा। कभी भी उससे निकाला न जाएगा। हदीस शरीफ़ में है कि नरक जो आज पैदा किया जा चुका है वह कभी नष्ट न होगा। अल्लाह तआ़ला के बाक़ी रखने के कारण वह हमेशा बाक़ी रहेगा। नरक और उसके

सांप, बिच्छु, कष्ट, दंड, पुलसरात से गुज़रना, क़्यामत की कठोरता इन सबों के संबंध में वादा किया गया है कि अगर ग़ुलाम आज़ाद किया जाए तो पुलसरात से सुरक्षित गुज़र कर मुक्ति मिलेगी, आयत करीमा (*छोड़ना गर्दन का*) में ग़ुलाम आज़ाद करने से क़्यामत में आसानी से गुज़र जाने का सवाब बताया गया है। जब ये आयत सुनी तो सहाबा ने सवाल किया। ग़ुलाम आज़ाद करने की मुझमें योग्यता नहीं, ऐसी स्थिति में हमलोग क्या करें? तो इस आयत शरीफ़ में इरशाद हुआ। **औ इत्आ़मुन फ़ि यौमिन ज़ी मस्-ग़-बतिन** -----। (*या खिलाना भूख के दिन में*) अर्थात् वह न हो तो खाना खिलाना सख़्तियों के दिनों में जब कि खाना उपलब्ध न होता या कोई भूखा भूख की सख्ती में पड़ा हो, आदेश हुआ कि ऐसा करने से पुलसरात पर सुरक्षित सैर करते हुए तुम गुज़र जाओगे।

(12) बिहिशत और उसकी नेअ़मतों के बयान में

स्वर्ग जो पैदा किया जा चुका है अब विनाश न होगा। परमात्मा के बाक़ी रखने से वह हमेशा बाक़ी रहेगा। उसकी सामग्री, सुख-चैन और उसके सम्पूर्ण भवन और सम्पूर्ण लक्ष्य उसके अतिरिक्त जो कुछ उसमें है वह सब मोमिनों के पूण्य-फल हैं। कथन है कि हज़रत अबुहुरैरा से कहा पैग़म्बर *सललल्लाहो अलैहै वसल्लम* ने कि स्वर्ग की दीवारें सोने और चाँदी की हैं, स्वर्ग की मिट्टी केसर और कस्तूरी की

है। नक़ल है कि पहली जमात जो स्वर्ग में प्रवेश करेगी उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद की तरह होंगे। प्रत्येक व्यक्ति को सौ पुरूषों की शक्ति होगी। खाना, पीना, संभोग, नाक, और मुँह के खखार, पेशाब-पाख़ाना मानवीय आवश्यकता स्वर्ग में न होंगी और स्वर्गीय के शरीर से ऐसी सुगंध आएगी जो कस्तूरी की भांति होगी और लाख वह खाँए और पीएँ ऐसा ही होगा।

नक़ल है कि स्वर्ग की हूरें रूप-सुन्दरता में याक़ुत और मरजान जैसी होंगी। उनके चेहरों की चमक और दमक पर निगाह ठहर न सकेगी। और वह स्वर्ग के कपड़ों में आईनों से ज़्यादा स्वच्छ-उज्जवल होंगी। साधारण मोती जो सबसे छोटा होगा उसकी रौशनी पूरब से पश्चिम तक फैली हुई होगी। प्रत्येक हूर सत्तर वस्त्रों में होंगी जिसकी कोमलंता एवं पवित्रता ऐसी होंगी कि उनकी चाँदी जैसी पिण्डलियाँ उनके कपड़ों के अन्दर से नज़र आएँगी। स्वर्ग में मोमिन आदम *अलैहिस्सलाम* जैसे लम्बे क़द के हो जाएँगे। जिनकी लम्बाई 30 गज़ और चौड़ाई 7 गज़ होगी। युवावस्था में ईसा(*अ०स०*) की भांति होंगे। सब आयु में 33 वर्ष के दिखाई देंगे। सबके सब जवान हो जाएँगे और कभी बूढ़े न होंगे। सुन्दरता में युसुफ़(*अ०स०*) की भांति होंगे, आवाज़ दाऊद(*अ०स०*) की भांति मधुर होगी। व्यवहार व स्वभाव हज़रत मोहम्मद(*स०*) के जैसा होगा।

नक़ल है कि वह महिलाएँ जो स्वर्ग में रहेंगी प्रत्यक्ष एवं

अप्रत्यक्ष अपवित्रता से पवित्र हो जाएँगी। नाक और मुँह के खखार, ख़ून, मल-मूत्र और वीर्य इनमें से कोई वस्तु उनमें उत्पन्न न होगी। ये सब की सब ईर्ष्या, कंजूसी और घमण्ड से पवित्र होंगी, सम्पूर्ण कष्टों, बीमारियों, जैसे सरदर्द, जाड़ा-बुख़ार, सर्दी-ज़ुकाम और इसी प्रकार तमाम चीज़ों से पवित्र होंगी। संसार की स्त्रियाँ जल-वीर्य और माहवारी से पैदा हुई हैं। स्वर्ग की हूरों को अल्लाह तआला ने कस्तूरी और केशर से पैदा किया है और अमृत से प्रकट किया है। ये सुन्दरता और सफ़ाई में इस दर्जा होंगी कि उनकी हड्डियों का गुद्दा दिखाई पड़ेगा। जिस प्रकार छाया मोतियों में दिखाई पड़ता है। हदीस शरीफ़ में है कि अगर कोई हूर (*अप्सरा*) अंधेरी रात में अपनी ऊँगली दुनिया में दिखा दे तो पूरा संसार सूर्य से अधिक रौशन हो जाए और अगर अपने लार (*गल*) को एक बुँद समुद्र में डाल दे तो सारे समुद्र का जल मीठा हो जाए और ये सभी हूरें जो इस सुन्दरता और गुणों के साथ स्वर्ग में है, स्वर्ग में मुसलमान महिलाओं के लिए लौंडियों की भांति होंगी। इसलिए कि हूरों को एक सुन्दरता से ज़्यादा नहीं हैं और वह यही उनकी सांसारिक सुन्दरता है। इस संसार वाली महिलाओं को स्वर्ग में दो सुन्दरता प्राप्त होगी। एक अ़ताई दूसरा जज़ाई। यानि उन बलाओं का बदला जो दुनिया में उन्होनें सहन किया और संसार की महिलाएँ स्वर्ग में हूरों के बीच महारानी की भांति होंगी। और ये हूरें लौंडियों की भांति होंगी।

हदीस शरीफ़ में है कि स्वर्ग में महिलाएँ अपने पति के साथ इतनी सुन्दर और पवित्र होंगी कि इसके कारण उनका कलेजा उनके पतियों का दर्पण होगा और पुरूषों का कलेजा उनकी पत्नियों का दर्पण होगा। हदीस शरीफ़ में है कि स्वर्ग की सभी महिलाओं में संसार की महिलाएँ सबसे अच्छी महिलाओं में से होंगी। इसलिए कि इन महिलाओं को स्वर्ग की हूरों पर श्रेष्ठता प्राप्त है। क्योंकि इन्होंने संसार की मुसीबतें सहन की हैं। स्वर्ग की हूरें संसार की महिलाओं की लालसा (*अभिलाषा*) में इस तरह होंगी जिस प्रकार आज संसार की महिलाएँ हूरों की लालसा में हैं।

नक़ल है कि स्वर्ग के मेवे दो प्रकार के होंगे एक वह हैं जो दुनिया में देखे गए और खाए गए हैं और उन मेवों का दूसरा प्रकार वह होगा जो न देखे गए हैं और न खाए गए हैं। लेकिन स्वर्ग का मेवा संसार के मेवा की भांति न होगा। संसार के मेवे मुलायम और बारीक नहीं है। वह दानेदार और रेशेदार हैं। उनको साफ़ करने की आवश्यकता होती है। इसकी दो वस्तुएँ छिलका और गुठली अलग कर दी जाती है। और ये मुराद से उतर जाते हैं। संसार के मेवे समूचे नहीं खाए जाते हैं। लेकिन स्वर्ग का मेवा समूचा खाया जाता है। उसकी कोई वस्तु फेंकी नहीं जाती है और वह बेमुराद यानि ख़राब नहीं होता है। मोमिन से इस प्रकार निकट होगा कि वह चाहें तो बैठे-बैठे खा लें और अगर वह तकिया लगाए लेटा हो तो उसके मुँह

तक ख़ुद-ब-ख़ुद पहुँच जाये और वह सभी मेवे उसके आदेश के आज्ञाकारी होंगे और अगर कोई फल तोड़ ले तो फ़ौरन उसी समय दूसरा फल उसमें उत्पन्न हो जाए। इसलिए कि स्वर्ग की सुख-सामग्री में कमी न हो और उसके विनाश और पतन नहीं है। संसार के प्रत्येक मेवा में एक स्वाद होता है स्वर्ग के फलों में सत्तर स्वाद होते हैं। स्वर्ग के मेवों को खाने से भूख और प्यास मालूम नहीं होंगी इसलिए कि स्वर्ग में भूख और प्यास नहीं है। ये सब के सब वहाँ स्वाद, सुख, आराम और प्रसन्नता के लिए हैं। जिस प्रकार कि संसार में दूध को ये बात प्राप्त है।

नक़ल है कि स्वर्ग में अल्लाह तआ़ला के हुक्म से चार नहरें जारी होंगी। एक दूध की, दुसरी शहद की, तीसरी शराब की, चौथे पानी की, और कुछ लोगों का कथन है कि नहर एक ही होगी, उसमें दूध भी होगा और शहद भी, शराब और पानी भी, और ये चारों एक दूसरे से न मिलेंगी। हदीस शरीफ़ में है कि मोमिन स्वर्ग में ऐसी शराब पिएँगे की उसमें कपूर (काफूर) की गंध होगी। वह संसार की शराब की भांति कड़वी न होगी और न होश खोने वाली। स्वर्ग में कपूर मिले हुए इस शरबत का एक श्रोत जारी है और स्वर्ग में वायु ऐसी होगी जो मोमिनों के आदेश के अधीन होगी। वह जिस ओर को चाहेंगे उस ओर चलेगी। जिस प्रकार संसार में बरसात, गर्मी और सर्दी होती है उस प्रकार स्वर्ग में न होगी। कहते हैं कि स्वर्ग में वायु ऐसी

होंगी जिस प्रकार संसार में सुबह की हवा होती है। न गर्म न ठण्डी। न दिन की हवा की तरह न रात की। स्वर्ग में सेवक कम उम्र लड़कों के तरह होंगे। वहाँ लोग आवश्यकतानुसार खाएँगे, न कम न अधिक। इसलिए कि अगर कम मिलेगा तो लालसा होगी, और ज़्यादा मिलेगा तो निंदा होगी। लोगों में ये कहावत मशहूर है कि स्वाद उसमें है आवश्यकतानुसार पीयी जाए। मस्ती और बेहोशी लाने वाली न हो। कै़ और उबकाहट पैदा करने वाली न हो। झागदार न हो, बदबूदार न हो, बल्कि अच्छी गंध वाली हो। स्वर्ग की शराब ऐसी होगी।

नक़ल है कि जन्नती तख़्त पर बैठे होंगे कि पक्षी उनके समक्ष दरख़्त तुबा के शाख़ पर आके बैठेगा और मधुर एवं सुरीली आवाज़ से कहेगा कि मैं वह हूँ कि स्वर्ग में कोई ऐसा चश्मा नहीं है कि जिसको मैंने न चखा हो और कोई ऐसी शराब नहीं है कि जिसको मैंने न पीया हो ओर कोई जंगल ऐसा नहीं है जहाँ मैंने चराई न की हो। मेरा स्वाद और मज़ा सारी वस्तुओं से उत्तम हैं मोमिन के सामने अपनी इतनी प्रशंसा करेगा कि वह उसके खाने की इच्छा करेगा। उनके इच्छा करते ही वह पक्षी उनके दस्तरख़्वान पर उनके सामने भूना हुआ, जिस प्रकार की उनकी इच्छा होगी वैसा ही पका हुआ आ जाएगा। मोमिन जितना चाहेगा खाएगा, उसके बाद कुछ ही पल में वही पक्षी अल्लाह-तआ़ला की क़ुदरत से ज़िन्दा होकर उड़ जाएगा और कहेगा कि मुझसा कौन है कि अल्लाह के मित्र ने मुझे

निवाला बनाया। स्वर्ग के दूसरे पक्षियों पर वह गर्व करेगा फिर अपने स्थान पर आकर बैठ जाएगा।

तफ़सीर में आया है कि स्वर्ग सातवें आकाश में है। अल्लाह-तआला के अ़र्श के नीचे जो छत की तरह है सम्पूर्ण स्वर्गों पर इसका साया है। वह छाया सूर्य के प्रकाश से मिला हुआ है। ऐसे नहीं जैसे दुनियाँ में किसी स्थान पर छाया होता है।

कहा जाता है कि एक बूढ़ी औरत मोहम्मद(स०) के हुजरे में उपस्थि हुई थीं मोहम्मद(स०) ने उनको देखा और कहा कि बूढ़ी औरतें स्वर्ग में न जाएँगी। बूढ़ी औरत ने रोना शुरू किया। उम्मुल-मोमेनि हज़रत अ़ायशा सिद्दिक़ा ने आकर गुज़ारिश की कि या रसूल अल्लाह हुज़ूर ने इनको शोकग्रस्त कर दिया। उत्तर मिला कि ऐ आयशा ये नहीं सुना है कि कल महाप्रलय के दिन अल्लाह-तआला सब की सब को कुवाँरी और जवान कर देगा। बूढ़ी रहेंगी कहाँ? अब वह औरत प्रसन्न हो गईं। पैग़म्बर(स०) का ये स्वभाव था।

स्वर्ग वालों का पूण्य यहाँ तक है कि उसके गुण विचार और ख़्याल में नहीं आ सकती। उनमें से एक बड़ा फ़रिश्ता है। पैग़म्बर(स०) से लोगों ने पूछा कि महाप्रलय के दिन वह फ़रिश्ता कैसा होगा? मोहम्मद(स०) ने फ़रमाया कि अल्लाह-तआला के आदेश से प्रत्येक दिन फ़रिश्ते भेंट और उपहार लेकर आएँगे। तो प्रत्येक मोमिन के महल के सतर स्थानों पर दरबान होंगे। और उन सभी सत्तर द्वारों पर

अनुमति मागेंगे। जब उन सत्तर द्वारों पर अनुमति प्राप्त हो जाएगी तब वह मोमिन के पास जाएँगे, कौन बड़ा फ़रिश्ता इससे बड़ा है कि जहाँ फ़रिश्ते अल्लाह-तआला की ओर से उपहार और भेंट लेकर बन्दा के पास ज़ाहिर हों। और सत्तर स्थान पर अनुमति प्राप्त करने के बाद वहाँ पहुँचें।

(13) सब्र और मुसीबत के बयान में

पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि ईमान के दो भाग हैं। एक सब्र और दूसरा शुक्र तो जिस किसी को मुसीबत और तंगी में सब्र प्राप्त नहीं और नेअ़मत एवं फ़राख़-हाली में शुक्र नहीं उसे ईमान की सिफ़त्त नहीं। हदीस शरीफ़ में है कि ईमान में शुक्र और सब्र सिर के समान है जिस प्रकार शरीर में सिर है तो ऐसा शरीर जो बिना सिर के हो किस काम का है। इसी प्रकार ईमान भी बिना सब्र के काम नहीं आता।

हज़रत मूसा(*अ०स०*)जिस दिन तूरे सीना की पहाड़ी पर गए थे अर्ज़ की कि ख़ुदा वन्दा बिहिशत में वह कौन सी मंजिल (*निर्दिस्त स्थान*) है जो तुझ से निकट है। आदेश हुआ कि ऐ मूसा वह मंज़िल ख़तीरऐ-क़ुद्दस (*अत्यधिक पवित्र*) है। मूसा (*अ०स०*)ने पूछा कि ख़ुदा वन्दा वहाँ कौन लोग रहेंगे? फ़रमान आया कि ऐसे बन्दे कि जिन्हे मैं मुसीबत में मुब्तला करूँ तो वह सब्र करें और जब उन को नअ़मत से नवाज़ूँ तो वह शुक्र करें और जिस समय उन पर

मुसीबत पड़े तो वह कह उठें कि **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन** (*हम तो अल्लाह ही के हैं और हम उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं।*)

यही वह लोग हैं जो ख़तीर-ऐ- कुद्स में रहेंगे।

उलमा का क़ौल है रंज की हालत में चार चीज़ें बहुत ख़ूब हैं। एक फ़ाक़ा (*भूख*) की मुसीबत को ज़ाहिर न होने देना, दूसरे सदक़ा और खैरात को ज़ाहिर न होने देना, तीसरे दर्द और बिमारी को ज़ाहिर न होनें देना, चौथे हर प्रकार की मुसीबत और तकलीफ़ का असर ज़ाहिर न होने देना।

हदीस शरीफ़ में है कि सब्र की शुरुआत मुसीबत पहुँचने के समय है तो किसी ने अगर मुसीबत पहुँचने के समय आर्त्तनाद (*नाला*) किया और उसके बाद सब्र किया तो ऐसे व्यक्ति ने सब्र का हक़ अदा न किया बलकि जैसे ही मुसीबत आये सब्र करे और कहे।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन अलाइ-क-अ़लैहिम् स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रहमतुन् व उला-इ-क हुमुल्मुहतदून॰ (*अलबक़र-156-157*)

(*हम तो अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं। ऐसे ही लोगों पर इनायतें हैं अपने रब की और मेहरबानी और वही हैं हिदायत पाए हुए*)

तो उस व्यक्ति के लिए यह तीन चीज़ें कही गई सलात, रहमत

और हिदायत और यह कि वह राह याफ़्ता लोगों में हैं, अल्लाह की ओर से सलात रहमत के मअ़्ने (*अर्थ में*) के हैं। इब्न अ़ब्बास (*रज़ी०अ०*) ने फ़रमाया है कि सलात मिनजानिब ख़ुदा वन्द इ़ज़्ज़ोजल सेवाए मुहम्मद रसूल अल्लाह सलअ़म और आप की उम्मत के न किसी एक उम्मत को और न किसी एक पैग़म्बर को था जैसा कि अल्लाह पाक ने साबिरों की तारीफ़ की और फ़रमाया **उलाई-क अ़लैहिम् स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रहमतुन् व उला-इ-क हुमुल्मुहतदून०।**

कहते हैं कि ख़ुदा वन्द तअ़ाला ने संसार में जितनी चीज़ें पैदा की हैं अगर वह सब की सब एक व्यक्ति को दे दी जायें और ख़ुदाए तअ़ाला वह सब चीज़ें बिहिश्त के शरबत के एक घोंट की ख़ुशख़बरी के बदले ले ले, बल्कि यह हाल हो कि वह सारी नेअ़मतें जो उस को अर्थात तुझे प्रदान की गई हैं वह सब तुझ से ले लिए जाने से पहले अगर तेरे जूते के केवल दो फ़ीते टूट जायें तो तू सब्र कर और कह उठे कि **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न ०** तो इन तीन इनाआ़मात का अल्लाह तआ़ला ने वअ़्दा फ़रमाया है एक सलात, दूसरी रहमत, तीसरी हिदायत।

एक समय हज़रत अ़ली(*रज़ी०अ०*) का चिराग़ गुल हो गया, उस के बुझते ही हज़रत ने फ़रमाया। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०** लोगों ने अर्ज़ किया कि क्या यह भी मुसीबत है?

कहा कि हाँ। तमाम ऐसी चीज़ें जो मोमिन को पेश आती हैं और वह ऐसी होती हैं कि मोमिन का दिल उस से खुश नहीं होता है तो वह सब मुसीबत है।

(14) मृतकों पर शोक एंव विलाप करने के बयान में

नक़ल है कि पहले आसमान में सौ हज़ार फ़िरिश्ते हैं जो शोक एवं विलाप करने वाले और शोक सुनने वाले पर धिक्कार करते हैं। और दूसरे आसमान में दो लाख फ़िरिश्ते हैं जो शोक करने वाले और शोक सुनने वाल पर धिक्कार करते हैं और तीसरे आसमान में तीन लाख फ़िरिश्ते हैं जो शोक करने वाले और शोक सुनने वाले पर धिक्कार करते हैं। चौथे आसमान में चार लाख फ़िरिश्ते हैं जो शोक करने वाले और शोक सुनने वाले पर धिक्कार करते हैं। पाँचवें आसमान में पाँच लाख फ़िरिश्ते हैं जो शोक करने वाले और सुनने वाले पर धिक्कार करते हैं। छठे आसमान में छः लाख फ़िरिश्ते हैं जो शोक करने वाले और सुनने वाले पर धिक्कार करते हैं और सातवें आसमान में सात लाख फ़िरिश्ते हैं जो शोक करने वाले और शोक सुनने वाले पर धिक्कार करते हैं।

हज़रत वहब का कहना है कि क़ाफ़ नामक पर्वत के निकट सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते हैं जो शोक एवं विलाप करने वाले और सुनने वाले और जो सहमत हैं उन पर भी धिक्कार करते हैं।

नक़ल है कि कल महाप्रलय के दिन जब शोक करने वाले

उठाए जायेंगे तो उन का सर पैर के नीचे रख दिया जाएगा। और वह औंधे होंगे। उस समय उन से कहा जाएगा कि अब अपने आप पर विलाप और शोक कर। फिर वह नरक में ले जाए जायेंगे और यही हाल शोक सुनने वालों का भी होगा।

हज़रत वहब का कहना है कि जो शोक करता है या सुनता है तो चालीस दिनों तक अल्लाह-तआ़ला की कृपा और दया से उस पर निराशा व्याप्त की जाती है और हदीस शरीफ़ में है कि कल महाप्रलय के दिन सभी विलाप करने वालों की दो पंक्तियाँ की जाएँगी। एक पंक्ति बायें ओर विलाप करेगी नरक वालों पर दूसरी पंक्ति दाहिनी ओर विलाप करेगी।

हदीस शरीफ़ में है कि जो मनुष्य कपड़े फाड़े या मुँह पर थप्पड़ मारे या विलाप करे वह मुझ से नहीं। (*मेरे चलन पर नहीं है*)।

फ़ातिमा नामी एक महिला थी। जब उस के बाप का देहांत हो गया तो वह महिला एक वर्ष तक मग़रिब की नमाज़ के समय रोया करती। एक रात अपने पिता को उसने सपना में देखा कि उसके सारे शरीर में फोड़ा हो गया। उस ने पूछा कि ऐ मेरे बाप आपके शरीर में यह क्या है? उस के पिता ने कहा कि यह सब तुमहारे आँसू के बूँद हैं हज़रत अबू बकर(*र०अ०*) ने फ़रमाया कि जो मनुष्य मुसीबत में घर में रह कर काले कपड़ों में शोक मनाता है अपने आयु के दिन-रात में जितनी साँस लेता है उसकी गिनती के बराबर उसके

नाम से पाप लिखे जायेंगे।

हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान(*र॰अ॰*) ने फ़रमाया कि जो मनुष्य घर में बैठ कर काले वस्त्र पहन कर सोग मनाता है तो हर रात और दिन की संख्या के बराबर उसके कार्यसूची (*नामाए-आमाल*) में पाप लिखेंगे।

हज़रत अ़ली(*क॰व॰*) ने फ़रमाया जो व्यक्ति काले कपड़ों में घर में बैठकर सोग मनाये तो फ़रिश्ते उसकी हर सांस की संख्या के बराबर उसकी कार्य सूची में पाप लिखेंगे।

हज़रत अब्दुर्रहमान(*रह॰अ॰*) ने फ़रमाया कि जो मनुष्य घर में बैठ कर शोक मनाए या काले कपड़े पहने या बाल नोचे तो यह दुरूस्त है कि वह इसलाम से बाहर हो गया और एक दूसरे दीन का चलन स्वीकार किया।

कहते हैं कि हज़रत दाऊद *अलैहिस्सलाम* नींद से जागे तो मुस्कुराने लगे। लोगों ने पूछा या नबी अल्लाह! ये मुस्कान कैसी है? फ़रमाया कि हमने सपने में देखा कि मैं स्वर्ग में पहुँचा हूँ। वहाँ बच्चों को देखा। सब के सब नारंगी से खेल रहे हैं मगर एक बच्चा ऐसा नज़र आया कि वह एक कोना में बहुत ग़मग़ीन बैठा हुआ है। हमने पूछा कि इस बच्चा को क्या हुआ है? क्योंकि स्वर्ग में जो आता है वह खुश रहता है लेकिन यह अप्रसन्न है? कहा कि इसके माता-पिता प्रत्येक दिन रोया करते हैं। इसी लिये यह बच्चा अप्रसन्न है।

(15) ग़ीबत (चुग़ली) के बयान में

हदीस शरीफ़ में है कि चुग़ली रोज़ा को तोड़ देती है। इस से मुराद यह है कि ऐसे रोज़े का न कोई फल मिलता है न पूण्य।

हज़रत अबू हुरैरा(र०अ०) ने रेवायत की है कि जो मुसलमान रोज़ा की हालत में चुग़ली करता है उसका रोज़ा निष्फल हो जाता है और वज़ू टूट जाता है।

चुग़ली इस बात को कहते हैं कि अगर वह बात किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में कही जाए और वह उस को सुने तो उससे अप्रसन्न हो।

हदीस शरीफ़ में है:

क़ालन नबी अलैहिस सलाम अल ग़ीबतो अशद्दो मिनज़्ज़िनाए

(पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि चुग़ली बलात्कार से भी बुरी है।)

जो व्यक्ति किसी मोमिन की चुग़ली करता है तो उसका उदाहरण ऐसा है कि यक़ीनन उसका मांस उसके मरने के बाद (*चुग़ली करने वाले ने*) खाया हो।

हज़रत जाबिर(र०अ०) का कथन है कि एक दिन सहाबा कराम पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* के पास उपस्थित थे। यकायक मुरदार की दुर्गंध आने लगा। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने पूछा कि जानते हो ये किस वस्तु की महक है? सहाबा कराम ने कहा कि या रसूल-अल्लाह हम लोग इस से बेख़बर हैं पैग़म्बर

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि ये दुर्गंध उन लोगों की है जो लोगों की चुग़ली करते हैं।

हदीस शरीफ़ में है कि जिस मनुष्य ने मुसलमान भाई का मांस संसार में खाया होगा। कल महाप्रलय के दिन उसका मांस उस के सामने डाल देंगे और कहा जायेगा कि खाओ जिस प्रकार संसार में तू ने इसका मांस खाया था अतः वह खाए गा और मुँह बनाये गा और याचना करेगा।

हदीस शरीफ़ में है कि जो व्यक्ति मुसलमान की चुग़ली करता है कल महाप्रलय के दिन उसका मुँह पीठ की ओर कर दिया जायेगा।

नक़ल है कि चुग़ली से दूर रहें। इसलिए कि इसमें तीन मुसीबतें हैं। पहली यह कि उसकी दुआ़ स्वीकार नहीं होती। दूसरी उसकी नेकियाँ स्वीकार नहीं होतीं। तीसरी यह कि उसके पापों में अधिकता हो जाती है।

हदीस शरीफ़ में है कि चुग़ली करने वाले को संसार में तो मज़ा आता है मगर परलोक में उसको नरक में झोंक दिया जायगा।

रिवायत है कि एक दिन एक बौनी महिला हज़रत पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* के पास आई और जब चली गई तो उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा(*र०अ०*) ने कहा कि किस दरजे की मधुर एवं सुभाषिनी है अगर यह बौनी न होती। पैग़म्बर

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम ने चुग़ली की। फिर फ़रमाया कि जो बात उस में थी हमने तो वही कही थी हुज़ूर ने फ़रमाया कि अगर तुम ऐसी बात कहतीं जो उस में न होती तो ये आरोप होता। हज़रत अबू हुरैरा(*र०अ०*) का कथन है कि हुज़ूर ने फ़रमाया है कि जिस व्यक्ति ने अपने जीवन में चुग़ली की अल्लाह-तआ़ला इन दस वस्तुओं से उस पर अज़ाब फ़रमायेगा। पहला यह कि खुदा की कृपा और दया से वंचित रहेगा। दूसरे यह कि सभी फ़िरिश्ते धिक्कार करेंगे। तीसरे यह कि जान उसकी अपमान की स्थिति में निकलेगी। चौथे यह कि नरक की आग उससे निकट होंगी। पाँचवें यह कि स्वर्ग का अधिकारी न होगा। छःठे यह कि उस पर क़ब्र का अज़ाब बहुत कठोर होगा। सातवें यह कि उसकी भक्ति का पूण्य बहुत कम हो जायेगा। आठवें यह कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम* की आत्मा उससे अप्रसन्न होगी। नवें यह कि अल्लाह-तआला का उस पर क्रोध होगा। दसवें यह कि महाप्रलय के दिन मीज़ान के निकट मुश्किल सामने आयेगी।

एक बुजुर्ग से लोगों ने पूछा कि क्या मसलेहत (*औचित्य*) है कि चुग़ली की गंध पैंग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम* के काल में उत्पन्न हो जाती थी और हम लोगों के काल में गुप्त है? क्या इस कारण चुग़ली की दुर्गंध पैदा नहीं होती जैसा कि दुर्गंध के कारण मकान के निकट में रहने वालों का तो यह हाल होता है कि वह खड़े

नहीं हो सकते और स्वंय उसके घर की महिला और पुत्र वहीं खाते हैं और कहते हैं कि मुझको तो कोई दुर्गंध मालूम नहीं होती चुग़ली की अमूमियत का यह असर तो नहीं? और प्रश्न किया कि अगर चुग़ली करने वाला चुग़ली करके तौबा (*पश्चाताप*) करता है तो उससे पहले कि जिसकी चुग़ली की है उसको ख़बर हो जाये तो यह तौबा लाभदायक है? उत्तर दिया कि हाँ लाभदायक है इस शर्त पर कि चुग़ली के पुराना होने से पहले तौबा की। इसलिए कि चुग़ली उस समय पुरानी होती है जब उस को सूचना मिल जाए जिस की चुग़ली की गई है तो अगर उसके तौबा करने के बाद उसको सूचना मिली तो उसकी तौबा निष्फल नहीं होगी। अल्लाह पाक दोनों को क्षमा कर देगा। जिस ने चुग़ली कर के तौबा की तो उसको भी और जिस की चुग़ली की गई उसको भी। उसको इस तकलीफ़ और दुःख के कारण से जो उसे अपनी शिकायत सुनने से पहुँची है और उसके तौबा के कारण से।

(16) संतानों (औलादों) पर माता-पिता के अधिकार के बयान में

माँ का अधिकार बाप के अधिकार से बड़ा है। माँ के अधिकार में रिआयत करनी वाजिब है। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि स्वर्ग माँ के चरणों के नीचे है। अर्थात उनकी सेवा में रहना उनके चरणें को चूमना और उनकी प्रसन्नता की टोह में लगे रहना है।

पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* से पूछा कि या रसूल अल्लाह किस के साथ नेकी की जाए? फ़रमाया कि अपनी माँ के साथ। फ़िर पूछा कि फिर किस के साथ नेकियाँ करुँ? फ़रमाया कि अपने बाप के साथ और जो उन से अधिक निकट हों।

पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि माँ-बाप की प्रसन्नता अल्लाह की प्रसन्नता है और रिवायत में है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि जिस मोमिन के माँ-बाप खुश हैं उससे कह दो कि जो पाप तुम से हों उसकी अधिक चिंता न करो, स्वर्ग में जाओगे और जिस के माँ-बाप अप्रसन्न हों उससे कह दो कि जो भी वह करे नरक में जायेगा।

नक़ल है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि कोई मनुष्य ऐसा नहीं है कि जो माँ-बाप के चेहरे को हर्ष भरी दृष्टि से देखे तो उस को एक हज का पूण्य प्राप्त होगा। पूछा कि या रसूल अल्लाह अगर सौ बार देखा जब भी?

रिवायत है कि बहुत बड़ा पाप यह है कि कोई अपने माँ-बाप को गाली दे कहा कि य़ा रसूल अल्लाह! माँ-बाप को कोई क्यों कर गाली देगा। फ़रमाया उस की सूरत यह है कि वह किसी के माँ-बाप को गाली देगा तो वह उस के माँ-बाप को गाली देगा।

पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* से रिवायत है कि जो मोमिन सुबह के समय उठे अगर उसके माँ-बाप हैं तो वह उन के

पास जाकर उनकी सेवा करे तो अल्लाह पाक स्वर्ग के दोनों द्वार उस के लिए खोल देता है और जो व्यक्ति सुबह को जागे और उसके माँ-बाप हैं वह उन कि सेवा में आकर नेकी और भलाई करे तो अल्लाह पाक उस पर अपनी कृपा और दया करता है।

संतान के लिए अनिवार्य है कि अपने माँ-बाप की सेवा से हरगिज़ तंग न आयें। चाहे माँ-बाप काफ़िर ही क्यों न हों। उन के इस्लाम लाने की प्रार्थना करते रहें ताकि वास्तविक अर्थ में जीवन उन को प्राप्त हो।

हदीस शरीफ़ में है कि प्रत्येक मोमिन जो अपने माता-पिता को सलाम करता है तो अल्लाह पाक उसको एक के बदले दस सलाम भेजता है और माँ-बाप के अधिकारों में से यह है कि जब उन का देहांत हो तो उन के जनाज़ा (*शव*) की नमाज़ पढ़े अगर वह मोमिन हैं तो उनकी निजात कि दुआ करे। उनके साथ किये गये वादों को निभाये उनकी की हुई वसीअतों को पूरा करे और उनके रिश्तेदारों के अधिकारों का घ्यान रखें।

हदीस शरीफ़ में है कि जो चाहता है कि अपने माँ-बाप से भेंट करे अगर वह क़ब्र में है तो उसको कह दो कि वह उनके मित्रों से भेंट करें।

चाहिए कि माँ-बाप की ओर से जो कुछ उससे हो सके दान दिया करे यह माँ-बाप के लिए उत्तम है।

कहते हैं कि एक महापुरूष रास्ते से गुज़र रहे थे एक पत्थर बीच रास्ते से उठा कर दायी ओर फेंक दिया और फ़रमाया ये इस नियत से है कि इस का पूण्य मेरी माँ को हो। दूसरा पत्थर बाईं ओर फेंका और फ़रमाया कि ये इस नियत से है कि इसका पूण्य मेरे बाप को पहुँचे।

ताबईन में से कुछ ने यह फ़रमाया है कि प्रत्येक ऐसी औलाद जो रात और दिन में पाँच बार अपने माँ-बाप के लिए दुआ़ करती है उसने अपने माता-पिता का अधिकार पूरा किया।

हज़रत अबू लैस(*रह०अ०*) से लोगों ने पूछा कि अगर किसी के माता-पिता अप्रसन्न हो गए हों तो कोई ऐसी युक्ति है कि प्रसन्न हो जायें? आप ने फ़रमाया कि तीन वस्तुयें प्रसन्न करने की हैं। पहला यह है कि वह चरित्रवान (*पारसा*) बन जाए। इसलिए कि माँ-बाप के निकट नेक औलाद से बढ़ कर कोई प्रिय नहीं। दूसरा यह कि माँ-बाप के निकट सम्बंधियों के साथ सम्बद्ध रहे और माँ-बाप के मित्रों के साथ मित्रता बनाये रखे। तीसरे यह कि माँ-बाप के लिए अल्लाह पाक से मुक्ति की प्रार्थना करता रहे और उनके लिए दान-दक्षिणा दिया करे।

लोगों ने प्रश्न किया कि इस में क्या भेद है कि माँ-बाप को अपनी संतानों पर इतनी ज़्यादा कृपा और दया होती है जितनी कि संतानों को माँ-बाप पर नहीं? इसका उत्तर यह दिया गया कि यह इस

कारण से है कि आदम और हव्वा के माता-पिता न थे। उनको एवं हव्वा की संतान थे। संतान पर दया और कृपा इसी कारण से है और संतान को प्रेम की ये कमी तरका में महाप्रलय तक के लिए मिली है।

(17) माता-पिता पर संतानों के अधिकार के बयान में

बाप पर संतान के अधिकार हैं। जब वह माँ के शरीर से अलग होकर जीवन में चरण रखे तो उसका एक अच्छा नाम रखे। जब उसको समझ हो जाए तो क़ुरान शरीफ़ की शिक्षा दें ताकि वह सुन्नत (*वह तरीक़ा जिस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और उनके असहाब चले*), फ़राएज़ (*इश्वरादिष्ट कर्म- जिन कामों का अल्लाह पाक ने या अल्लाह पाक की ओर से हुक्म हुआ हो*) और धर्म नियम में वह किसी दूसरे पर र्निभर न करे। जब व्यस्क हो जाए तो उस का विवाह कर दें।

एक व्यक्ति अमीरूल मोमेनीन हज़रत उमर ख़ताब(*र०अ०*) के पास आया और अपने पुत्र की शिकायत की कहा कि या अमीरूल मोमेनीन! यह लड़का अत्याधिक अवहेलना (*नाफ़रमानी*) करता है। हज़रत उमर ने उस लड़के की ओर देखा और कहा ऐ लड़के अपने पिता की अवहेलना से डर क्यों कि बाप का अधिकार बहुत है। लड़के ने कहा या अमीरूल मोमेनीन पिता पर पुत्र का भी कोई अधिकार है? कहा कि है। प्रथम अधिकार यह है कि कम ज़ात की महिला को पत्नि न बनाये संतान को लोगों के सामने बुरा-भला

न कहें। दूसरे यह है कि पुत्र का नाम अच्छा रखें। तीसरे यह कि क़ुरान शरीफ़ की शिक्षा दिलवायें। लड़के ने कहा कि क़सम है अल्लाह की या! अमीरूल मोमेनीन मेरी माँ हिन्दुस्तानी है लगभग चार दीनार में खरीदी गई है और मेरा नाम अच्छा नही रखा है बल्कि मेरा नाम **जोअ़ल** (*झ़गड़ालू, बुरी शकल*) और क़ुरान की एक आयत भी नही पढ़ाया है हज़रत उमर ख़त्ताब ने उस व्यक्ति की ओ़र देखा और कहा कि तुम कहते हो कि मेरा लड़का अवहेलना करता है। प्रथम अवहेलना तो तुम से हुई है।

साबित बिनाई कहते हैं कि एक व्यक्ति को हम ने देखा कि वह अपने पिता को मार रहा है। लोग उसके चारों ओर एकत्रित हो गए हैं और कहने लगे कि ये क्या करता है? आखिर तेरा बाप है। बाप ने कहा ऐ लोगों उसे कुछ ना कहो। यह मेरा पुत्र जो मुझको मार रहा है इसी प्रकार हमने भी अपने बाप को मारा था तो अल्लाह पाक ने इसी संसार में मुझे इस विपत्ति में ग्रस्त किया है।

एक व्यक्ति एक महा पुरूष के पास आया और उसने कहा कि मेरे बेटे ने मुझको मारा है उन्होंने कहा कि तुमने लड़के को इल्म और अदब सिखलाया है? उसने कहा कि जी हाँ सिखलाया है। पूछा क्या सिखलाया है? उसने उत्तर दिया कि खेती-काशतकारी। महापुरूष ने कहा कि तेरे लड़के को जानवर बैल इत्यादि को मारने की लत हो गई है। इसलिए उसने भी तुझ को एक जानवर समझा है। शुक्र कर

कि तेरा सर न फटा।

नक़ल है की जब लड़का बोलने लगे तो ,पहले जो बात कहलवाई जाए वह कलिमए तैयबा **ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह** है इस कलिमए तैयबा की सात बार उसको शिक्षा दें। उसके बाद ये आयतें सिखाएँ।

फ़-त-अ़ालल्-लाहुल् मलिकुल् हक़्क़ुल मुबीन ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल अ़र्शिल- करीम (*मुअ़मिनून-116*) उस के बाद आख़िरी सूरः **हश्रि हु-वल्ला हुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व** याद कराएँ।

जो व्यक्ति ऐसा करेगा महाप्रलय के दिन अल्लाह पाक के हिसाब लेने से बच जाएगा। जब लड़का दायाँ हाथ और बायाँ हाथ पहचानने लगे तो दाहिने हाथ से अच्छे कामों के करने की आदत लगाऐं। इसका पूण्य स्वंय उसको होगा न कि लड़के को। जब उसकी आयु सात वर्ष हो जाए तो नमाज़ पढ़ने की ताकीद करें और जब दस वर्ष का हो जाए तो नमाज़ के लिए तम्बीह (*चेतावनी*) दें और उसका बिस्तर अलग रखें और सभी संतानों के बीच फल, मेवा, उपहार और व्यवहार और कृपा में समानता का ध्यान रखें। बाज़ार से या बाहर से फल और खाने की कोई वस्तु लायें तो पहले लड़कियों से देना शुरू करें और औलाद के लिए हर समय अच्छी दुआ़ करें। हदीस शरीफ़ में है कि औलाद के हक़ में बाप की दुआ़ पैग़म्बरों की

दुआ़ जैसी है जो उम्मत के हक़ में होती है तो किसी समय भी औलाद के हक़ में अभिशाप न करें और न कभी बुरी बात उनके लिए सोंचें। शायद कि वह अभिशाप स्वीकृत हो जाये और उसकी बर्बादी का कारण बने और ये भी चाहिए कि किसी दूसरे की औलाद के प्रति बुरा न करें और उस का बुरा न चाहें क्योंकि उसका असर उसकी औलाद की ओर पलटता है चाहे कुछ दिन के बाद ही हो। कहते हैं कि हज़रत यूसुफ़ *अलैहिस्सलाम* के भाईयों ने यूसुफ़ *अलैहिस्सलाम* को क़ैद कर दिया और बेच डा़ला तो उन लोगों की औलाद क़ैद हो गई गरचे कुछ समय के बाद ही हुआ।

हदीस शरीफ़ में हैं कि अल्लाह पाक हर उस व्यक्ति पर कृपा और दया करता है जो अपनी औलाद की सहायता और भलाई करते हैं अर्थात उसको अच्छे कामों की नरमी के साथ आज्ञा करें ताकि वह इसका पालन कर सकें वरना वह बेचारे गुनहगार होंगे और अज़ाब के पात्र हो जायेंगे।

एक महापुरूष अपनी औलाद को किसी कार्य के करने का आदेश नही देते थे। लोगों ने उन से पुछा कि आप अपने लड़कों को किसी कार्य को करने का आदेश क्यों नहीं देते? आपने कहा कि इस भय से की शायद इन से प्रतिपालन न हो सके तो वह गुनहगार हो जायेंगे और मैं अपनी औलाद के लिए यह उचित नहीं समझता कि वह नरक के पात्र हों।

(18) रिश्तेदारों से संबंध रखने के बयान में

हदीस शरीफ़ में है कि रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार और प्रेम, आयु में बढ़ोतरी (*वृद्धि*) करता है। अर्थात मरने के बाद उसकी खुशनामी होती है और मरने के बाद की नेकनामी दूसरी आयु है। वरना आयु कम या ज़्यादा नहीं होती। रिश्तेदारों से प्रेम और व्यवहार बनाये रखना वाजिब है। स्वजनों में वह लोग सम्मिलित हैं जिनसे निकाह जायज़ नहीं। जैसे फूफी, मौसी इत्यादि।

हदीस शरीफ़ में है कि जो व्यक्ति रिश्तेदारी का परि त्याग करता है वह स्वर्ग में प्रवेश न होगा।

''उन लोगों के साथ'' धन से व्यवहार करे अगर उनको किसी वस्तु की आवश्यक्ता हो तो **रद्द** न करें। इसलिए कि उन की आवश्यकताओं को रद्द (*निरस्त*) करना रिश्तेदारी का त्याग करना है।

हदीस शरीफ़ में है कि स्वजनों से बर्ताव और व्यवहार करते रहो अर्थात सलाम ही के द्वारा हो।

तफ़सीर **अबुलैस** में लिखा है कि रिश्तेदारों से रिश्तेदारी विच्छेद करना बहुत बड़ा गुनाह है। इसलिए कि अल्लाह पाक ऐसे व्यक्ति से अपनी रहतम (*दया*) रोक लेता है और उससे भी जो ऐसे लोगों के संगत में हो।

रिवायत है कि अ़रफ़ा की रात में हम लोग पैग़म्बर *सल्लल्लहु अ़लैहि वसल्लम* की सेवा में उपस्थित थे कि हुज़ूर ने फ़रमाया कि

आज की रात रिश्ता विच्छेद करने वालों की मुक्ति नहीं। यानि पूण्य नहीं। मगर उस व्यक्ति की कि जो उठे और अपने स्वजनों से जाकर मिले, कोई भी न उठे मगर सहाबा में से एक व्यक्ति (*सहाबा*) गए और फिर लौट आए पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने पूछा कि तुमहें क्या काम था कि सहाबा की समूह से उठ कर गए? अ़र्ज़ की या रसूल अल्लाह मेरी एक मौसी हैं जो मुझ से दुःखी थीं। जब मैने हुज़ूर से ये सुना तो उनके पास गया उनसे सफ़ाई करली। मेरी मौसी ने मुझे आशिर्वाद दिया और मैंने भी उनके लिए प्रार्थना की। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया "अहसनतो" तुमने बड़ा अच्छा काम किया उन के साथ भलाई की। बैठ जाओ।

जानना चाहिए कि जिस समूह में बिरादरी को त्याग करने वाला रहता है अल्लाह पाक वहाँ अपनी रहमत नहीं भेजता है और किसी सदाचारी का पूण्य उतना जल्दी नहीं मिलता है जितनी जल्दी रिश्तेदारों से व्यवहार करने में मिलता है और अल्लाह पाक किसी पाप के अ़ज़ाब में इतनी शीघ्रता नहीं करता जितना कि संसार में बिरादरी त्याग करने वालों के साथ ।

इमाम ज़ोहाक ने इस आयत **यम्हुल्लाह मा यशाउ व युस्बितु** (सूरतुअ़-दि,39) (*मिटाता है अल्लाह जो चाहे और बाक़ी रखता है।*) की तफ़सीर में लिखा है कि जो व्यक्ति स्वजनों से संबंध रखता है उसकी आयु अगर तीन दिन बाक़ी हो तो अल्लाह पाक उस की

आयु में तीस वर्ष की बढ़ोतरी कर देता है यानि उसकी आयु में वृद्धि कर देता है और अगर ऐसा व्यक्ति जो बिरादरी को त्याग करने वाला हो और उसकी आयु तीस वर्ष बाक़ी हो तो अल्लाह पाक उसकी आयु घटा कर तीन दिन कर देता है।

नक़ल है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक का दिया हुआ भाग्य किसी भी स्थिति में नहीं बदल सकता मगर दुआ़ से और किसी की आयु अधिक नहीं होती मगर रिश्तेदारों के साथ भलाई और व्यवहार करने से।

मनुष्य को रोज़ी से वंचित नहीं किया जाता मगर उन पापों के कारण से जिस के रिश्तेदार हों और वह उन से मिलने को न जाए और अपने माल से उनपर ख़र्च न करे और स्वजनों का उसने त्याग किया हो।

हुक्म है कि हर शुक्रवार को या हर महीना स्वजनों से भेंट करनी चाहिए हज़रत हसन (*रज़ी०अ़०*) से रेवायत है कि फ़रमाया रसूल अल्लाह *सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम* ने कि बन्दा का कोई चरण जो वह धरती पर रखता है अल्लाह के निकट उन दो चरणों से अधिक महान और सर्वोत्तम नहीं है एक फ़र्ज़ नमाज़ की पूर्ति के लिए जाना और दूसरे रिश्तेदारों और स्वजनों के दर्शन और भेंट के लिए चरण उठाना।

(19) पड़ोसियों के अधिकार के सम्बन्ध के बयान में

पड़ोसियों के अधिकार का ख़ास ध्यान रखना इसलाम की सुन्नतों में से एक सुन्नत है।

हदीस शरीफ़ में है कि जिस प्रकार अपने पुत्र पर माँ की सेवा और सम्मान अनिवार्य है उसी प्रकार पड़ोसी की सेवा और आदर करना अनिवार्य है।

पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने फ़रमाया है कि पड़ोसी तीन प्रकार के हैं। एक वह पड़ोसी है जिसका एक अधिकार है और वह ऐसा पड़ोसी जो काफ़िर है। दूसरे वह पड़ोसी है जिसका दो अधिकार है और वह पड़ोसी मुसलमान ग़ैर रिशतादार है। एक हक़, हक़्क़े इसलाम है और दूसरा हक़, हक़्क़े पड़ोसी। तीसरा वह पड़ोसी है जिस के तीन अधिकार हैं। वह ऐसा पड़ोसी है जो मुसलमान है और रिशतादार है। एक तो इसलाम का हक़ है, दूसरे आत्मीयजन (*रिशतादारी*) का और तीसरे पड़ोसियों का और पड़ोसियों का अधिकार चालीस घरों तक शामिल है। इसी कारण कुछ बुजुर्गों ने अपने घर की दाहिनी ओर के चालीस घरों के लिये इसार (*त्याग*) फ़रमाया है और इसी प्रकार अपने घर के बायीं ओर चालीस घरों पर भरण-पोषण (*बाल-बच्चों का ख़र्च*) फ़रमाया है।

हज़रत हसन बसरी *रहमतुल्लाह अलैह* से नक़ल है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने फ़रमाया है कि पड़ोसी का अधिकार

यह है कि जब वह क़र्ज़ माँगे तो उससे उनकी सहायता की जाए और जब वह सहायता को पुकारें तो उस का जवाब दिया जाए। जब बीमार हों तो रोगी के पास जाकर उनकी ख़ैरियत पूछी जाए और अगर उनको शक्ति न हो और वह सहायता चाहें तो उनको सहारा दिया जाए और उनपर कोई विपत्ति या मुसीबत आ पड़े तो शोक दुख प्रकट किया जाए और उनके यहाँ कोई ख़ुशी का अवसर आए तो शुभ-कामनाएँ दी जायें। जब उनकी मृत्यु हो जाए तो उनकी शव-यात्रा में सम्मिलित हों। जब वह घर पर उपस्थित न हों तो उनके घर और परिवार का ध्यान रखा जाए। पके हुए खानों से उनको कुछ दिया जाए और किसी प्रकार उन्हें दुःखी न किया जाए।

हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी(*र०अ०*) फ़रमाते हैं कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने मुझे तीन चीजें बतलाई हैं। जब तुम देग पकाओ तो उसमें पानी ज़्यादा डालो और पड़ोसियों को पहुँचाओ। दूसरे यह कि अपने बादशाह के आदेश का पालन करो। यद्यपि कन-कट्टा हो। तीसरे यह कि पड़ोसी जो भी हो और जैसा भी हो जब वह मरे उसकी अर्थी के पास जाओ अगर मुसलमान है तो उनके लिए ग़म खाओ कि वह अच्छा आदमी था और उससे प्रसन्नचित हो जाओ ताकि अल्लाह पाक उसे बख़्श दे।

हज़रत अबु हुरैरा(*र०अ़०*) का कहना है कि फ़रमाया रसूल अल्लाह *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने यक़ीन करो कि जिसने अपने

पड़ोसी को अनुचित (*नाहक़*) दुःख पहुँचाया तो उसके बदले में अल्लाह पाक स्वर्ग की सुगंध उस व्यक्ति पर हराम कर देगा और उसकी जगह नरक में चयन कर देगा।

ख़ूब समझ लो कि अल्लाह तआ़ला जिस प्रकार घर वालों के पाप का प्रश्न करेगा उसी प्रकार पड़ोसियों से संबंधित प्रश्न करेगा। पड़ोसियों के अधिकार को पूरा करने के सिलसिले में चाहिए कि अगर वह कोई दीवार उठाए तो कोई रूकावट पैदा न की जाए और साधारण आवश्यक वस्तुओं में से अगर उसके घर से कुछ माँगें तो ऐसा न करें कि न दें। उदाहरण के तौर पर अगर पानी माँगें, आग माँगें, या कोई बर्तन तो उससे संकोच न करें और पड़ोसियों की परेशानियों को दूर करने में उसका हाथ बटायें।

(20) पत्नि पर पति के अधिकार के सम्बन्ध के बयान में

हदीस शरीफ़ में है कि यक़ीनन ऐसी महिला जो पाँचों समय नमाज़ पढ़ती है और रमज़ान के महीना का रोज़ा रखती है और अपनी इच्छाओं को बूरे कामों से रोकती है और पति की आज्ञाकारी है तो वह जिस द्वार से चाहे स्वर्ग में प्रवेश कर जाए।

हदीस शरीफ़ में है कि हर वह महिला जो सप्ताह के सातों दिन अपने पति की सेवा करे तो नरक के सातों द्वार उस पर बंद हो जाते हैं और स्वर्ग के सातों द्वार उस पर खोल दिए जाते हैं। वह जिस

द्वार से चाहे स्वर्ग में प्रवेश कर जाए।

हदीस शरीफ़ में है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि अगर किसी के लिए सज्दा करना जायज़ होता तो अल्लाह पाक महिलाओं को आदेश देता कि पति को सज्दा करे। इस आधार पर कि जो श्रेणी पति को प्राप्त है।

रिवायत है कि एक महिला पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* के पास आईं। अनुरोध किया या रसूल अल्लाह! पत्नि पर पति का क्या अधिकार है? उत्तर दिया कि अपने को पति से दूर न रखे। वह ऊँट के पालान पर क्यों न हो और बिना अनुमति पति के नफ़िल के रोज़े न रखे। अगर बिना आदेश पति के नफ़िल के रोज़े रखेगी तो उस रोज़े का पूण्य और फल पति को मिलेगा। और जो कम नसीबी होगी वह महिला के लिए होगी। पति की अनुमति के बिना घर से बाहर अपने चरण को न निकालें। अगर बिना अनुमति घर से बाहर जाएगी तो फ़रिश्ते उस समय तक उस पर धिक्कार करते रहेंगे जब तक वह घर वापस न लौट आए।

हज़रत क़तादा(*रज़ी०अ०*) से रिवायत है कि महिलाओं से नमाज़ की पूछ के बाद पहला प्रश्न जो होगा वह पति के अधिकार के सम्बन्ध में होगा और कहा गया है कि महिला नमाज़ पढ़े और अपनी नमाज़ की दुआ़ में पति को शामिल न करे यानि पति के लिए दुआ़ न माँगे तो वह नमाज़ अपने हाल पर रूकी रहती है। यहाँ तक

कि दूसरे समय की नमाज़ अदा करे और उस में दूआ़ करे।

पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* से रिवायत है कि नबी करीम *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि पति की नाक के एक नथने से रीम जारी हो और दूसरे से ख़ून उस हाल में अगर महिला उसको अपवित्र जाने तो अभी तक उसने पति के अधिकार की पूर्ति नहीं की।

हदीस शरीफ़ में है कि नबी करीम *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि महिलाओं पर पतियों का अधिकार इस प्रकार है जिस प्रकार मेरा अधिकार तुम लोगों पर तो जिस किसी ने पति का अधिकार नष्ट किया उसने अल्लाह पाक का अधिकार नष्ट किया। महिलाओं को चाहिए कि अगर उन का माल (*धन*) पति पर ख़र्च हुआ हो तो उसका एहसान न जताए और पति से तलाक़ का निवेदन न करे। भूख, निर्धनता एवं दुर्दशा में पति के सामने मुँह मैला न करे ताकि अल्लाह तआ़ला के प्रकोप से बचे। उनसे विनम्रता-पूर्वक बात करें। पति को अपने जीवन-यापन के लिए चिन्तित न करें। अपनी कठिनाइयों और परेशनियों को पति के सामने अधिक न ब्यान करें और पति की सेवा में कोताही न करें। जहाँ तक उनसे हो सके पति के साथ दोस्ती और प्रेम पूर्वक व्यवहार करें। अपने पति के लिए बनाओ श्रृंगार से अपने को सुसज्जित करें और पति की आवाज़ या बात पर चीख़ कर न बोलें और अपने माता-पिता या रिश्तेदारों से

भेंट के लिए बिना अनुमति पति के न जाएँ चाहे वह मृत्यु का समय ही क्यों न हो।

हदीस शरीफ़ में है कि जो महिला बिना अनुमति पति के घर से बाहर चरण निकालती है तो उस पर प्रत्येक वस्तु धिक्कार करती है। बल्कि सूर्य और चन्द्रमा भी रहमत के साधन नहीं बनते जब तक कि उसका पति प्रसन्न न हो जाए।

(21) पति पर पत्नी के अधिकार के सम्बन्ध के बयान में

पति को चाहिए कि जो ख़ुद खाऐं वह अपनी पत्नियों को खिलाएँ और जैसा ख़ुद वस्त्र पहनें वैसा पहनाएँ। उनको न दुरदुरायें, न मार पीट करें और जब अल्लाह पाक ने उस को बरकत और ख़ुशहाली दिया हो तो उनके ख़र्च और ख़ुराक में विस्तार करें और हमेशा उनको अच्छे कामों की शिक्षा देते रहें। महापुरूषों में से एक महापुरूष अपने पत्नि के बुरे व्यवहार पर सब्र किया करते, उनसे लोगों ने पूछा कि आप इस दर्जा क्यों सहन किया करते हैं? आपने उत्तर दिया कि इस भय के आधार पर कि पुरूष को चाहिए कि वह अपने सम्बन्ध में बदगुमाँ रहे और यूँ सोंचे कि अगर तू नेक होता तो वह बद मिज़ाज न होती और सुधार के द्वारा महिला की ख़ुश मिज़ाजी को अपने समान करले और हर हाल में उस के साथ प्रेमपूर्वक जीवन-यापन करे।

नक़ल है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा(*रज़ी०अ०*) से फ़रमाया कि ऐ आ़यशा आओ हम दोनों एक साथ खड़े होकर दौड़ें और देखें कि आगे कौन बढ़ता हैं। जब दोनों दौड़े तो हज़रत आ़यशा सिद्दीक़ा(*रज़ी०अ०*) आगे निकल गईं। पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि एक बार फिर दौड़ें, दोनों एक बार फिर दौड़े। इस बार हुज़ूर आगे बढ़ गए और कहा कि तुम एक बार बढ़ीं इस बार हम बढ़ गए। इस लिए दोनों बराबर हो गए। हज़रत आयशा कहती हैं कि आप घर में जब आते और मौजूद होतो तो हमलोगों को ऐसा मालूम होता जैसे हम ही लोगों में से हैं।

आदाब में है कि महिला को न मारें और अगर मारें तो शरअ़ के आदेश के अनुसार मारें। अदब सिखाने के लिए मारें और अगर मारें तो दूसरे समय उसको ख़ुश कर दें ताकि इस चेतावनी और सिखलाने का लाभ नष्ट और निष्फल न हो और तीन छड़ी से अधिक न मारें अगर इससे अधिक मारेंगे तो गुनहगार और पापी होंगे।

हदीस शरीफ़ में है कि जो व्यक्ति अपनी पत्नि को तीन लकड़ी से अधिक मारे तो कल महाप्रल्य के दिन संसार के प्रत्येक मनुष्यों के सामने उसको अपमानित और निन्दित किया जाएगा। जिसको सभी अगले और पिछले संसार के लोग देखेंगे।

अगर किसी के पास सदाचारी और नेक पत्नि हो और अच्छा

जीवन-यापन कर रही हो तो उस पर दूसरी महिला धन की प्राप्ति के उद्देश्य से न लाई जाए और महिलाओं को चाहिए कि अपने अतिरिक्त तीन दूसरी महिलाओं तक पति को मना न करें क्यों कि अल्लाह पाक ने उसके लिए तीन दूसरी औरतें हलाल की हैं। इस शर्त पर कि इन सभों के बीच पति खान-पान और पहनावा-उढ़ावा और शयन-कक्ष में न्याय रखें।

महापुरूषों का कथन है कि महिलायें दो प्रकार की हैं। एक सही मार्गदर्शन करने वाली और दूसरी मार्ग खोटी करने वाली। मार्गदर्शक वह है जो दीन एवं इस्लाम और नेक कामों में सहायक हों और मार्ग खोटी करने वाली वह हैं जो दीन के कामों में सहायक न हों।

हदीस शरीफ़ में है कि जो महिला ग़ैरत यानि रश्क में अल्लाह के लिए सब्र करती है उसके लिए शहीद का पुण्य और फल है। अगर कोई पुरूष महिला को ऐसी गाली दे कि उस गाली पर हद वाजिब हो (*उचित धार्मिक दंड*) हो तो कल महाप्रल्य के दिन अल्लाह तआ़ला के समक्ष उस पर हद जारी होगी।

हदीस शरीफ़ में है कि पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* ने फ़रमाया कि ऐ आयशा हज़रत जिबरइल ने मुझ को औरतों के बारे में कुछ वसीयत की है। यहाँ तक कि मैं भ्रम करने लगा कि उनको तलाक़ देना हराम हुआ हो। ऐ आयशा जो पुरूष अपनी ओर से अपने उत्तराधिकारी के अधिकार को रोकता है ये सच और सही है कि

अल्लाह तआ़ला स्वर्ग की नेअ़मतें उससे महाप्रलय के दिन रोक देगा।

ऐ आयशा! जिस पुरूष के पास दो पत्नियाँ हों और उन दोनों के बीच खान-पान, पहनावा-उढ़ावा और शयन-कक्ष में न्याय और बराबरी न करे और वह दो नज़र से देखे तो उस पर अल्लाह की धिक्कार, फ़रिश्तों की धिक्कार और प्रत्येक मनुष्यों की धिक्कार होती है। ऐ आयशा उस महिला को जो अपने पति से गर्भवती हुईं हों तो उन दिनों में वह उस महिला के समान होती हैं जो हमेशा दिन में रोज़ा रखती है और रात में पूजा-पाठ में बिता कर जागृत रहती है और ऐ आयशा हर वह औरत जो प्रसव-पीड़ा की कष्ट उठाती है उसके हर एक दर्द के बदले में एक गुलाम आज़ाद करने का पूण्य मिलता है और ऐ आयशा! महिला जब बच्चे का दूध छुड़ाती है तो मुनादी आसमान से आवाज़ लगाता है कि ऐ औरत! उस समय तक जो कुछ तू ने किया पुरस्कार मिलते रहे और अब सिलसिला समाप्त हुआ। अब भविष्य में जो काम शेष हैं फिर से शुरू कर। ऐ आ़यशा! जो औ़रत अपने पति पर अपने मेहर को हल्का करती है तो उसको प्रत्येक दिरहम के बदले एक हज और एक उमरा का पूण्य मिलता है और अल्लाह तआ़ला उसको और उसके नए और पुराने, खुले और छुपे, जिसको जानकर किया हो और जिसको अनजाने किया हो, अगले और पिछले सभी गुनाहों को क्षमा कर देता है। ऐ आ़यशा जब पत्नि अपने पति के अत्याचार, अन्याय और कठोरता पर सब्र न करे तो उसका उदाहरण

ऐसा है कि उसने अल्लाह के रास्ते को खुद से गंदा किया।

हज़रत मआज़ जबल *रज़ी०अ०* ने रिवायत की है कि एक महिला अपने स्थान से उठी और अपने पति के लिए खाना पकाने लगी। उसमें उसको कष्ट और परिश्रम उठानी पड़ी। इस सिलसिले में अल्लाह तआला नरक की आग उस पर हराम कर देगा।

हज़रत अब्दुल्लाह मसऊद *रज़ी०अ०* ने पैग़म्बर *सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम* से रिवायत करते हैं कि जो महिला संसार के कामों में अपने पति की सहायता करती है तो अल्लाह पाक उस महिला को जो सहायता सहयोग अपने पति के प्रति उसने किया है, इसके बदले में उसके पति से दस वर्ष पूर्व उसको स्वर्ग में जाने की अनुमति देगा। वह अपने इस कार्य के बदले जन्नती कपड़े पहनेगी। बनाव-श्रृंगार कर के अपने पति के निकट जाएगी और उसके महल में गुज़ारेगी।

हदीस शरीफ़ में है कि सौभाग्यशाली, सदाचारी महिला की पहचान तीन वस्तुओं से है। पहला यह कि अल्लाह पाक से डरने वाली हो, दूसरे यह कि उस की यह आदत हो कि जो कुछ अल्लाह ने उसके और उसके पति के भाग्य में लिखा है उसपर राज़ी और खुश रहे। तीसरे यह कि मौत की तैयारी करती रहे।

महापुरूषों का कथन है कि जिसको ये चार वस्तुएँ प्राप्त हैं उसको संपूर्ण नेअ़मतें प्राप्त हो गईं। प्रथम- तन साबिर, द्वितीय- हृदय शाकिर, तृतीय- ज़ुबान ज़ाकिर, और चतुर्थ- सदाचारी।

(22) .ग़ुलामों और ख़िदमतगारों के अधिकार के बयान में

नक़ल है कि एक दिन अबूज़र ग़फ़्फ़ारी(*रज़ि०*) ने अपने दास (*नौकर*) के चेहरे पर एक तमाचा मारा। दास हुज़ूर(*स०*) की सेवा में आया और शिकायत की। पैग़म्बर(*स०*) ने अबूज़र ग़फ़्फ़ारी(*रज़ि०*) की निन्दा की कि नमाज़ी के मुँह पर न मारा करो और कहा कि जो स्वयं खाओ वह उनको दो। जो स्वयं पहनो उनको पहनाओ और अगर तुम इनसे बुरी धारणा रखते हो तो बेच डालो (*अलग कर दो*)। हज़रत अबुबकर(*रज़ि०*) ने हुज़ूर अकरम(*स०अ०*) से रेवायत की है कि ख़ुदाई करने वाले यानि वह लोग जो अपने अधीन (*मोहताजों, कमज़ोरों, ग़ुलामों*) को सताते हैं और उनके साथ भलाई नहीं करते वह स्वर्ग में प्रवेश न होंगे।

रेवायत है कि एक व्यक्ति ने अ़र्ज़ की या रसूल अल्लाह(*स०*) अपने मोहताजों और अधीनस्थों के साथ जो गुनाह मैंने किए हैं इसके लिए कितनी बार तौबा करूँ? उत्तर दिया कि प्रतिदिन सत्तर बार।

नक़ल है कि एक बार हुज़ूर(*स०*) के सहाबा में से एक सहाबी ने अपने मित्र के घर से पानी मांगा। उस घर की मालकिन ने उन्हें पानी देने के लिए अपनी सेविका को पुकारा ताकि उनकों पानी दे दे। वह सेविका बहुत देर से आई। उस महिला ने उस सेविका को गाली दी। उन सहाबी ने सुना तो कहा कि ऐ बीबी महाप्रलय के दिन अल्लाह पाक तुम्हें इस सेविका के व्यवहार में आदेश देगा कि

जब तक चार गवाह इस बात की न पेश करो कि ये सेविका वैसी ही है जैसा कि तुमने इस को कहा है, छुटकारा नहीं होगा। वह औरत काँप गई उस सेविका को इसी समय उन्होंने आज़ाद कर दिया। उन सहाबी ने कहा कि ऐ बीबी इस समय जो तुमने उसके साथ ये किया उसको अल्लाह पाक तुम्हारी इस गाली का कुफ़्फ़ारा कर दें। और उन्होंने नसीहत की कि तुम किसी कठिन काम का आदेश दिया करो तो अनिवार्य है कि उस काम में उसका हाथ बटाओ यानि उसकी सहायता करो। दूसरे यह कि अपने गुलामों और सेविकाओं पर एक साथ दो कामो का बोझ न डालो उदाहरण के रूप में एक साथ खाना भी पकाने को और कपड़ा भी धोने को न कहो और इसी प्रकार और दूसरे कामों में। अपने क्रोध में आकर उसको मारा-पीटा न करो मगर चेतावनी और अदब के लिए केवल तीन छड़ी। अगर तीन छड़ी से ज्यादा मारोगी तो कल महाप्रलय के दिन इसी मात्रा में तुम पर मार पड़ेगी।

पैग़म्बर(स०) सहाबा में से अगर कोई व्यक्ति अपनी सेविका या दास को तकलीफ पहुँचाते तो लज्जित और संकुचित होते और उसी समय उस दास या सेविका को आज़ाद कर देते।

रेवायत है कि अमीरूल मोमेनिन उस्मान(रज़ि०) ने एक दिन अपने दास की कान खींची थी जिससे वह लज्जित हुए। दास से कहा कि तुम भी मेरा कान मल दो। उसने कान न मला। लेकिन

अमीरूल मोमेनिन ने उस समय तक उस दास को न छोड़ा जब तक कान न मलवा लिया।

हदीस शरीफ़ में है कि जो व्यक्ति अपने नौकर को ऐसे गुनाह पर मारे जो उससे न हुआ हो तो यक़ीनन उसका कुफ़्फ़ारा यह है कि वह उसको आजा़द कर दे। अपने गुलामों को दीन का अदब सिखाए कि इस बन्दा पर उसका सीखना फ़र्ज़ है जब किसी सेविका या नौकर को मारने लगे और उस मार पर नौकर या सेविका अल्लाह पाक का नाम ले ले तो चाहिए कि उस समय हाथ रोक ले और क्या़मत के दिन के कि़स्सास को याद करे। जब गुलाम उसके योग्य न हो तो उसको आजा़द और सज़ा न दे बल्कि उसको बेच डाले। अलग कर दे और अगर सेवक या सेविका के फ़साद और बहक जाने का डर हो और वह सेवक हो तो उसको सेविका से मंसूब कर दे और अगर सेविकाए हो तो उसको सेवक से मंसूब कर दे।

हदीस शरी़फ में है कि बर्तन के टूट जाने पर सेवकों या दासों को न मारे। क्योंकि हर वस्तु का एक समय है। जिस प्रकार मनुष्य की मृत्यु का। जब सेवक अधिक समय तक सेवा में रह चुका हो तो उसको आजा़द कर दें। शायद कि अल्लाह पाक उस नौकर के शरीर और अंगो के बदले उसके शरीर और अंगो को नरक की आग से आजा़द कर दे और अगर उसने सेवक के प्रति कोई बुराई की हो तो उससे भी अलग हो जाए और मुक्ति पाए।

पैग़म्बर *(स0)* से रेवायत है कि हुजूर *(स0)* ने खुतबा के अन्दर लोगों से कहा कि अल्लाह पाक से डरो। गुलामों, मोहताजों को अच्छी तरह से रखो। जो स्वयं खाते हो उनको खिलाओ, जो स्वयं पहनते हो उनको पहनाओ और उनकी शक्ति और सामर्थ्य से अधिक कार्य का आदेश न दो। यह लोग भी तुम्हारी तरह पैदा किए हुए बन्दे हैं। ***वल्लाह आलम बिस्सवाब*** *(अल्लाह बेहतर जानता है)*

क़त्‌अ़ए तारीख़ तर्जमा

डा० हज़रत सय्यद शाह तलहा रिज़वी बर्क़ चिशती निज़ामी
(सज्जादा नशीं ख़ानक़ाहे चिशतिया निज़ामिया, शाह टीली, दानापुर)

हज़रते मख़दूम की बेशक तवज्जुह हो गई
फ़ातेहा पढ़के जो मैं वापस हुआ दरगाह से
उनके रशहाते क़लम का फ़ैज़ जारी आ़म हो
सिद्क़े दिल से थी यही अपनी दुआ़ अल्लाह से
आचुकीं हिन्दी में भी अकसर किताबें आपकी
छटकी है क्या चाँदनी इस माहे नीम माह से
लो फ़वायद भी छपी शुक्रे ख़ुदा फ़िरदौसियो
हो सबाते कोह तुम को इज़तिराबे काह से
तर्जमा **आ़बिद अ़लीयुश शरफ़ीयुल फ़िरदौसी** ने
कर दिया ख़ूब पाको साफ़ हर इशबाह से
हाँ मेरे **मौलाना अ़ली अरशद बलख़ीओ फ़िरदौसी** का
हुक्म था तारीख़ के दो शेअ़री रसमोराह से
साहिबे निस्वत का हर एक अम्र है फ़ौक़ुल अदब
देखिये मिलता है क्या अब इस गदा को शाह से
दिल वफ़र्ते इमबिसात ऐ बर्क़ यूँ गोया हुआ
मिल गई तारीख़ इसकी लफ़ज़े "ख़ातिर ख़ाह" से

1422 हिजरी

इशारिया

वह शख़्सियतें जिन का ज़िक्र इस पुस्तक में आया

वह पुस्तकें जिन का ज़िक्र इस पुस्तक में आया

FAWAID-UL-MURIDIN

By: Hazrat Makhdoom Jahan Sheikh Sharafuddin Ahmad Yahya Maneri Firdausi (R.A)

Hindi Translation
Syed Shah Md. Abid Ali Sharfi Firdausi

मतबुआते मकतब–ए–फिरदौसिया

1. वसीयतनामा (उर्दू)
2. तालीमाते फिरदौसिया (भाग एक) उर्दू
3. खुतबाते फिरदौसि (उर्दू)
4. तालीमाते कुतुबुल असर (उर्दू)
5. कलामे कमाली (उर्दू)
6. नक़्श व अक्स (उर्दू)
7. फ़वायदे रुक्नी (हिन्दी)
8. फ़वायदुल मुरीदीन (हिन्दी)

MAKTABA FIRDAUSIA
KHANQAH-E-SHARAF
ZAKIR NAGAR, JAMSHEDPUR
PIN-832110 (JHARKHAND)
PHONE-0657-2463372
(M) 9934563236